Quick word tests

तरक़्क़ी	तरक़्क़ी	आह्लाद	आह्नाद	फ्रीज	फ्रीज	मग्ज़	मग्ज	हृत्स्थल	हत्स्थल	सिर्फ	सिर्फ
ज़्यादा	ज़्यादा	ब्राह्मण	ब्राह्मण	ह्रितिक	ह्रितिक	सम्यग्ज्ञान	सम्यग्ज्ञान	ज्योत्स्रा	ज्योत्स्ना	व्हिस्की	व्हिस्की
मन्ज़ूर	मन्जूर	मिस्त्री	मिस्त्री	एल्ज़े	एल्जे	दिग्दर्शन	दिग्दर्शन	ईषत्स्पृष्ट्	ईषत्स्पृष्ट्	इश्क	इश्क
इलेक्ट्रान	इलेक्ट्रान	दुष्प्रह्य	दुष्प्रह्य	उत्त्य	उत्त्य	पंक्ति	पंक्ति	उत्स्रुत	उत्सुत	प्रश्न	प्रश्न
स्ट्रीटकार	स्ट्रीटकार	अद्भुत	अद्भुत	उत्य	उत्य	मंगलवार	मंगलवार	सद्गति	सद्गति	रुश्द	रुश्द
छुट्टी	छुट्टी	इल्ज़ाम	इल्जाम	रत	रत्न	दुर्लंघ्य	दुर्लंघ्य	सद्गन्थ	सद्ग्रन्थ	वैशिष्ट्य	वैशिष्ट्य
महाराष्ट्र	महाराष्ट्र	अक्षरे	अक्षरे	सज़्स	सज्स	पच्चीस	पच्चीस	उद्घाटन	उद्घाटन	ओष्ठ्य	ओष्ठ्य
ज्येष्ठ	ज्येष्ठ	ज्ञान	ज्ञान	एज्जा	एज्जा	अच्छा	अच्छा	ज़िद्दी	ज़िद्दी	मिस्त्री	मिस्त्री
दर्ष्टांत	दर्शत	मौके	मौके	ब्यर्थे	ब्यर्थै	उज्ल	उ.ज्र	प्रसिद्ध	प्रसिद्ध	आह्वान	आह्वान
चिट्ठी	चिट्ठी	कैंटोमेंट	कैंटोमेंट	तरक़्क़ी	तरक़्क़ी	संस्कृत	संस्कृत	उद्बोध	उद्बोध	आह्लाद	आह्नाद
वाङ्मय	वाङ्मय	छूट कुछ	छूट कुछ	फ्रैक्चर	फ्रैक्चर	हिंस्र	हिंस्र	द्रव	द्रव	ह्रास	ह्रास
वैशिष्ट्य	वैशिष्ट्य	करेंट	करेंट	डॉक्टर	डॉक्टर	छुट्टी	छुट्टी	दारिद्य	दारिद्र्य	अंकुड़ा	अंकुड़ा
पुनस्स्थापना	पुनस्स्थापना	राष्ट्रून	राष्ट्रून	इलेक्ट्रॉन	इलेक्ट्रॉन	चिट्ठी	चिट्ठी	अध्रुव	अध्रुव	अंतर्निहित	अंतर्निहित
स्वास्थ्य	स्वास्थ्य	कॉफी	कॉफी	रक्त	रक्त	विशाखपट्नम	विशाखपट्नम	मंज़ूर	मंज़ूर	अन्तः	अन्तः
कम्प्यूटर	कम्प्यूटर	हिंदू-मुस्लिम	r हिंदू-मुस्लिम	वक्त	वक्त्र	ट्रैन	ट्रैन	मंत्री	मंत्री	अंतर्वेशन	अंतर्वेशन
सान्ध्य	सान्ध्य	करणाऱ्या	करणाऱ्या	युक्त्यभास	युक्त्यभास	सुपाठ्य	सुपाठ्य	स्वातंत्र्य	स्वातंत्र्य	अग्नि	अग्नि
इज़ात	इज़्जत	स्रेह	स्नेह	वक्फ़	वक्फ	लड्डू	लडू	द्वंद्व	दंद	अद्भुत	अद्भुत
उज्ज्वल	उज्ज्वल	श्री	श्री	शुक्ल	शुक्ल	ब्रह्मण्य	ब्रह्मण्य	उन्नीस	उन्नीस	छुछुंदर	छुछुंदर
प्राप्त्याशा	प्राप्त्याशा	स्त्री	स्त्री	रिक्शा	रिक्शा	उत्क्रम	उत्क्रम	इंस्टिट्यूट	इंस्टिट्यूट	हुंकार	हुंकार
इकत्तीस	इकत्तीस	ध्ड्यां	^{ध्ह्} यां	पक्ष	पक्ष	उत्क्षेप	उत्क्षेप	उन्हें	उन्हें	हित इच्छुक	हित इच्छुक
सत्रह	सत्रह	शक्ति	शक्ति	लक्ष्मी	लक्ष्मी	विद्युत्प्रहक	विद्युत्प्रहक	दीन्ह्यो	दीन्ह्यो	कुर्री	कुरी
पद्म	पद्म	महाराष्ट्र	महाराष्ट्र	अभक्ष्य	अभक्ष्य	महत्त्व	महत्त्व	नैप्स्यून	नैप्स्यून	कुल्हिया	कुल्हिया
विद्यार्थी	विद्यार्थी	कट्टू	कटू	दिक्स्थापन	दिक्स्थापन	पत्थर	पत्थर	प्राप्त	प्राप्त		
उन्नीस	उन्नीस	रूप	रूप	सख़्त	सख़्त	विद्युत्दर्शी	विद्युत्दर्शी	सब्ज़ी	सब्जी		
पश्चिम	पश्चिम	हूं	अप्ट	अख्त्यार	अख्त्यार	पत्नी	पत्नी	छब्बीस	छब्बीस		
श्रीलंका	श्रीलंका	बुत्तो	बुत्तो	ज़ख़्म	ज़ख़	सपल्य	सपत्न्य	मार्किट	मार्किट		
विश्वविद्यालय	विश्वविद्यालय	बार्गी	बार्गी	ख्रिष्टां	ख्रिष्टां	उत्प्रवास	उत्प्रवास	दुर्ज्ञेय	दुर्ज्ञेय		
स्नान	स्नान	कुंग	कुंग	फ़रव्र	फ़ख़	त्याहिक	त्र्याहिक	उर्दू	उर्द <u>ू</u>		
बुद्ध	बुद्ध	हूप	हूप	अग्ग्रास	अग्ग्रास	विद्युतशक्ति	विद्युतशक्ति	निर्द्वन्द्व	निर्द्वन्द्व		

चक्रव्यूह से निकालती है गीता

जीवन में जब भी संकट आता है, गीता में श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया उपदेश हमें इस चक्रव्यूह से बाहर निकालने का रास्ता दिखाता है। गीता जयंती (2 दिसंबर) पर चिंतन...

मद्भवद्गीता के अध्याय 16 के श्लोक 24 में कहा गया है - तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ॥ अर्थात तेरे लिए इस कर्तव्य और अकर्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण हैं। यानी हमारे कार्य-व्यवहार को शास्त्र सही राह दिखाते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता भी शास्त्र है, जो हमें जीवन के चक्रव्यूह से बाहर निकालती है।

आप जब भी हवाई जहाज की यात्रा करते हैं तो आपको हमेशा विमान परिचारिका विमान उड़ने से पहले कुछ महत्वपूर्ण सूचनाएं देती है। उन सूचनाओं में सबसे प्रमुख है कि विमान में कितने निकास द्वार अर्थात एक्जिट डोर हैं। भले ही आपने जीवन में कई बार हवाई यात्राएं की होंगी, फिर भी हर बार आपको सुरक्षा नियम बताए जाते हैं। आपने शायद एक बार भी उन निकास द्वारों का प्रयोग न किया हो, परंतु आपातकाल में उनका प्रयोग करने की सलाह दी जाती है। इसी तरह जीवन की उड़ान में भी हमारे पास एक्जिट पॉलिसी अर्थात निकास पद्धति होनी ही चाहिए।

आमतौर पर आप अपनी कार का, घर का तथा घर की वस्तुओं का भी बीमा कराते हैं, क्योंकि आप चाहते हैं कि इन वस्तुओं को कोई नुकसान न पहुंचे, परंतु अगर कुछ हो भी जाए तो आप नुकसान के उस

झटके को सहने में सक्षम हो सकें। हम बात कर रहे हैं दुख झेलने की उस क्षमता की, जो दुख के आने से पहले हमारे भीतर पैदा हो जाती है। दुख अगर बताकर आए तो सहना आसान है, परंतु यदि एकदम आ जाए तो मुश्किल आ जाती है। उदाहरण के लिए, यदि आपको मालूम हो कि कल सप्लाई का पानी नहीं आएगा, तो आप अपने आपको इसके लिए तैयार कर सकते हैं, पर अगर बिना सूचना के अचानक पानी चला जाए तो उसे झेलना काफी मुश्किल हो जाता है। आर्थिक समस्याओं के लिए तो हम अक्सर तैयार रहते हैं, शारीरिक स्तर पर भी हम कुछ हद तक स्वयं को सक्षम बना लेते हैं, पर प्रहार जब मन पर होता है तो हमारे पास कोई भी एक्जिट पॉलिसी अर्थात उस समस्या से निकलने का द्वार नजर नहीं आता। ऐसे में हम उन लोगों की शरणागित जाते हैं जो ख़ुद अपनी समस्याओं में उलझे हुए होते हैं। किसी शायर ने कहा है, 'थामा था उनका हाथ जो ख़ुद ढूंढते थे सहारा। इसीलिए कहा जाता है कि जब भी आप खुद को संकट की स्थिति में पाएं, तो शास्त्रों का सहारा लीजिए। जब किसी शब्द की स्पेलिंग या अर्थ पर आप अटकते हैं तो शब्दकोश की शरण में जाते हैं, फिर शब्दकोश में जो भी लिखा हो उसको आप अक्षर-अक्षर स्वीकार करते हैं।

हमारा जीवन एक तरह का महाभारत ही है और हम सब इसमें अभिमन्यु की तरह हैं, जिसे कठिनाइयों के चक्रव्यूह में आना तो आता है, पर निकलना नहीं आता। इस जीवन के चक्रव्यूह से निकलना तथा निकालना आता है भगवान कृष्ण की वाणी गीता को, परंतु आज हम गीता से बहुत दूर चले गए हैं।

ताजा खबरें, फोटो, वीडियो व लाइव स्कोर देखने के लिए क्लिक करें m.jagran.com पर

चक्रव्यूह से निकालती है गीता

जीवन में जब भी संकट आता है, गीता में श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया उपदेश हमें इस चक्रव्यूह से बाहर निकालने का रास्ता दिखाता है। गीता जयंती (2 दिसंबर) पर चिंतन...

मद्गवद्गीता के अध्याय 16 के श्लोक 24 में कहा गया है - तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ॥ अर्थात तेरे लिए इस कर्तव्य और अकर्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण हैं। यानी हमारे कार्य-व्यवहार को शास्त्र सही राह दिखाते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता भी शास्त्र है, जो हमें जीवन के चक्रव्यूह से बाहर निकालती है।

आप जब भी हवाई जहाज की याला करते हैं तो आपको हमेशा विमान परिचारिका विमान उड़ने से पहले कुछ महत्वपूर्ण सूचनाएं देती है। उन सूचनाओं में सबसे प्रमुख है कि विमान में कितने निकास द्वार अर्थात एक्जिट डोर हैं। भले ही आपने जीवन में कई बार हवाई यालाएं की होंगी, फिर भी हर बार आपको सुरक्षा नियम बताए जाते हैं। आपने शायद एक बार भी उन निकास द्वारों का प्रयोग न किया हो, परंतु आपातकाल में उनका प्रयोग करने की सलाह दी जाती है। इसी तरह जीवन की उड़ान में भी हमारे पास एक्जिट पॉलिसी अर्थात निकास पद्धित होनी ही चाहिए।

आमतौर पर आप अपनी कार का, घर का तथा घर की वस्तुओं का भी बीमा कराते हैं, क्योंकि आप चाहते हैं कि इन वस्तुओं को कोई नुकसान न पहुंचे, परंतु अगर कुछ हो भी जाए तो आप नुकसान के उस

झटके को सहने में सक्षम हो सकें। हम बात कर रहे हैं दुख झेलने की उस क्षमता की, जो दुख के आने से पहले हमारे भीतर पैदा हो जाती है। दुख अगर बताकर आए तो सहना आसान है, परंतु यदि एकदम आ जाए तो मुश्किल आ जाती है। उदाहरण के लिए, यदि आपको मालूम हो कि कल सप्लाई का पानी नहीं आएगा, तो आप अपने आपको इसके लिए तैयार कर सकते हैं, पर अगर बिना सूचना के अचानक पानी चला जाए तो उसे झेलना काफी मुश्किल हो जाता है। आर्थिक समस्याओं के लिए तो हम अक्सर तैयार रहते हैं, शारीरिक स्तर पर भी हम कुछ हद तक स्वयं को सक्षम बना लेते हैं, पर प्रहार जब मन पर होता है तो हमारे पास कोई भी एक्जिट पॉलिसी अर्थात उस समस्या से निकलने का द्वार नजर नहीं आता। ऐसे में हम उन लोगों की शरणागित जाते हैं जो ख़ुद अपनी समस्याओं में उलझे हुए होते हैं। किसी शायर ने कहा है, 'थामा था उनका हाथ जो ख़ुद ढूंढते थे सहारा। इसीलिए कहा जाता है कि जब भी आप खुद को संकट की स्थिति में पाएं, तो शास्त्रों का सहारा लीजिए। जब किसी शब्द की स्पेलिंग या अर्थ पर आप अटकते हैं तो शब्दकोश की शरण में जाते हैं, फिर शब्दकोश में जो भी लिखा हो उसको आप अक्षर-अक्षर स्वीकार करते हैं।

हमारा जीवन एक तरह का महाभारत ही है और हम सब इसमें अभिमन्यु की तरह हैं, जिसे कठिनाइयों के चक्रव्यूह में आना तो आता है, पर निकलना नहीं आता। इस जीवन के चक्रव्यूह से निकलना तथा निकालना आता है भगवान कृष्ण की वाणी गीता को, परंतु आज हम गीता से बहुत दूर चले गए हैं।

ताजा खबरें, फोटो, वीडियो व लाइव स्कोर देखने के लिए क्लिक करें m.jagran.com पर

गुदगुदी | शायरी | टेक ज्ञान | Hinglish News | गेम्स | गरमा गरम | Travel | Deals | Property | चुनाव

सेंसेक्स, निफ्टी ठिठके, मिडकैप-स्मॉलकैप में उछाल

बैंक खाते से ज्यादा पैसा निकालने पर देना होगा टैक्स!

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा विदेशी पूंजी का टॉनिक

रंग लाई पीएम मोदी की मेहनत, चीन से आया तोहफा

पेट्रोल, डीजल पर उत्पाद शुल्क बढ़ा, नहीं बढ़ेंगे दाम

मोदी के दीवाने हुए दुनियाभर के निवेशक

बीड़ी-सिगरेट पर अब नहीं होगी सख्ती

पर्सन ऑफ द ईयर की दौड़ में मोदी फिर अव्वल

स्वागत के दौरान राहुल के सामने लगे 'प्रियंका-प्रियंका' के नारे

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा विदेशी पूंजी का टॉनिक

उप्र में अंधेरा दूर करने के लिए ताक पर राजनीति

कर्नाटक व गुजरात में दो अबोध बच्चियों से दृष्कर्म सेंसेक्स, निफ्टी ठिठके, मिडकैप-स्मॉलकैप में उछाल

बैंक खाते से ज्यादा पैसा निकालने पर देना होगा टैक्स!

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा विदेशी पूंजी का टॉनिक

रंग लाई पीएम मोदी की मेहनत, चीन से आया तोहफा

पेट्रोल, डीजल पर उत्पाद शुल्क बढ़ा, नहीं बढ़ेंगे दाम

मोदी के दीवाने हुए दुनियाभर के निवेशक

बीड़ी-सिगरेट पर अब नहीं होगी सख्ती

पर्सन ऑफ द ईयर की दौड़ में मोदी फिर अव्वल

स्वागत के दौरान राहुल के सामने लगे 'प्रियंका-प्रियंका' के नारे

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा विदेशी पूंजी का टॉनिक

उप्र में अंधेरा दूर करने के लिए ताक पर राजनीति

कर्नाटक व गुजरात में दो अबोध बच्चियों से दुष्कर्म

119 देशों के बच्चों ने UAE का राष्ट्रगान गाकर बनाया रिकॉर्ड

केवल 6 सेकेंड में 'आउट ऑफ स्टॉक' हुआ जियाओमी रेडमी नोट

चीनी एपल कही जाने वाली कंपनी जियाओमी का पहला फैबलेट 'जियाओमी रेडमी नोट' आज पहली बार ऑनलाइन साइट फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था जिसका नतीजा यह हुआ कि केवल 6 सेकेंड में सारे हेंडसेट बिक गए।

आज दोपहर ठीक 2 बजे सेल शुरू होने के 6 सेकेंड में ही पूरे 50,000 जियाओमी रेडमी नोट हेंडसेट बिक गए जिसके बाद फ्लिपकार्ट पर 'आउट ऑफ स्टॉक' का मेसेज आने लगा।

जियाओमी के इससे पहले भारत में आए डिवाइस एमआई3 और रेडमी 1एस स्मार्टफोन की तरह ही जियाओमी रेडमी नोट ने भी अपनी पहले सेल में एक रेकार्ड कायम किया है।

जियओमी रेडमी नोट की विशेषताएं

रेडमी नोट में 5.5 इंच का डिस्प्ले है जो कि 720x1280 पिक्सल का रेजोल्यूशन प्रदान करने में सक्षम है। कंपनी द्वारा डिस्प्ले को कॉर्निंग गोरिल्ला ग्लास3 की सुरक्षा भी दी गई है। इसके अलावा इसमें 1.7 गीगा हर्ट्ज मीडियाटेक ऑक्टा-कोर एमटी 6992 प्रोसेसर, माली-420 जीपीयू, 2जीबी रैम, 3,100 एमएएच की बैटरी, 8 जीबी का इंटरनल स्टोरेज व तस्वीरें लेने के लिए 13 मेगापिक्सल का रियर और 5 मेगा-पिक्सल का फ्रंट कैमरा है।

जियओमी रेडमी नोट भारतीय बाजार में दो वेरिएंट- डुअल सिम (2जी + 3जी) और सिंगल सिम (4जी कनेक्टिविटी) वेरिएंट में आया है जिसमें से आज केवल डुअल सिम वेरिएंट को ही फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था।

पढ़े - भारत आया वनप्लस वन स्मार्टफोन, जानिए फीचर्स

चीनी एपल कही जाने वाली कंपनी जियाओमी का पहला फैबलेट 'जियाओमी रेडमी नोट' आज पहली बार ऑनलाइन साइट फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था जिसका नतीजा यह हुआ कि केवल 6 सेकेंड में सारे हेंडसेट बिक गए।

आज दोपहर ठीक 2 बजे सेल शुरू होने के 6 सेकेंड में ही पूरे 50,000 जियाओमी रेडमी नोट हेंडसेट बिक गए जिसके बाद फ्लिपकार्ट पर 'आउट ऑफ स्टॉक' का मेसेज आने लगा।

जियाओमी के इससे पहले भारत में आए डिवाइस एमआई3 और रेडमी 1एस स्मार्टफोन की तरह ही जियाओमी रेडमी नोट ने भी अपनी पहले सेल में एक रेकार्ड कायम किया है।

जियओमी रेडमी नोट की विशेषताएं

रेडमी नोट में 5.5 इंच का डिस्प्ले है जो कि 720x1280 पिक्सल का रेजोल्यूशन प्रदान करने में सक्षम है। कंपनी द्वारा डिस्प्ले को कॉर्निंग गोरिल्ला ग्लास3 की सुरक्षा भी दी गई है। इसके अलावा इसमें 1.7 गीगा हर्ट्ज मीडियाटेक ऑक्टा-कोर एमटी 6992 प्रोसेसर, माली-420 जीपीयू, 2जीबी रैम, 3,100 एमएएच की बैटरी, 8 जीबी का इंटरनल स्टोरेज व तस्वीरें लेने के लिए 13 मेगापिक्सल का रियर और 5 मेगापिक्सल का फ्रंट कैमरा है।

जियओमी रेडमी नोट भारतीय बाजार में दो वेरिएंट- डुअल सिम (2जी + 3जी) और सिंगल सिम (4जी कनेक्टिविटी) वेरिएंट में आया है जिसमें से आज केवल डुअल सिम वेरिएंट को ही फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था।

पढ़े - भारत आया वनप्लस वन स्मार्टफोन, जानिए फीचर्स

तीन मिररलेस कैमरे के साथ आया निकॉन

Publish Date:Mon, 01 Dec 2014 10:12 AM (IST) | Updated Date:Mon, 01 Dec 2014 11:35 AM (IST)

नई दिल्ली। निकॉन ने 1 सीरीज के कैमरे- निकॉन 1 एडब्ल्यू1, निकॉन 1 वी3 और निकॉन 1 जे4 को किट लेंसेज के साथ क्रमश: 39,950 रुपये. 43.950 रुपये और 24.950 रुपये में लांच किया है। इन तीन कैमरों में से वी3 और जे4 की घोषणा इस साल के मार्च और अप्रैल माह में की गयी थी जबकि एडब्ल्यू1 की घोषणा सितंबर, 2013 में ही कर दी गयी थी। इन तीनों कैमरे की बिक्री इस माह के अंत तक शुरू कर दी जाएगी। निकॉन के अनुसार एडब्ल्यू 1 दुनिया का पहला वाटरप्रूफ और शॉकप्रूफ मिररलेस कैमरा है। इसमें 14.2 मेगापिक्सल सीएएक्स-फार्मेट सीमॉस सेंसर और उच्च क्वालिटी के इमेज के लिए निकॉन का एक्सपीड 3ए इमेज प्रोसेसिंग इंजन लगा है। साथ ही इसमें वाइड आइएसओ रेंज [164 से 6400] लगा है जिससे किसी भी तरह की रोशनी में अच्छी तस्वीरें आ सकती हैं। यह कैमरा निकॉन के एडवांस हाइब्रिड ऑटोफोकस सिस्टम के साथ आया है, जो आपके मविंग एक्शन को कैप्चर कर सकता है। 11-27.5मिमी एफ/3.5-5.6 किट के साथ आने वाले निकॉन 1 एडब्ल्यू1 की कीमत 39,950 रुपये रखी गयी है। दूसरा कैमरा है निकॉन वी3 जो काफी हल्के वजन का है। 1वी3 में एक्सपीड 4ए इमेज प्रोसेसर के साथ 18.4 एमपी सी-एक्स फार्मेट सीमॉस सेंसर है। इसका आइएसओ रेंज 160 से 12,800 है। इसमें हाइब्रिड एफ सिस्टम लगा है जिसमें 171 कंट्रास्ट-डिफेक्ट एफ प्वाइंट और 105 फेज डिटेक्ट एफ प्वाइंट है। 10-30 मिमी पीडी लेंस किट के साथ आने वाले इस कैमरे की कीमत 43,950 रुपये है। निकॉन 1 जे4 में 1 इंच का 18.4एमपी सीएक्स फार्मेट सेंसर है। निकॉन 1 जे4 में लगा हाइब्रिड एफ सिस्टम इसकी क्वालिटी में इजाफा करता है। 10-30 मिमी पीडी लेंस के साथ काले और सफेद रंग में यह कैमरा 24,950 रुपये में उपलब्ध है।

नई दिल्ली। निकॉन ने 1 सीरीज के कैमरे- निकॉन 1 एडब्ल्य1, निकॉन 1 वी3 और निकॉन 1 जे4 को किट लेंसेज के साथ क्रमश: 39,950 रुपये, 43,950 रुपये और 24,950 रुपये में लांच किया है। इन तीन कैमरों में से वी3 और जे4 की घोषणा इस साल के मार्च और अप्रैल माह में की गयी थी जबकि एडब्ल्य्1 की घोषणा सितंबर, 2013 में ही कर दी गयी थी। इन तीनों कैमरे की बिक्री इस माह के अंत तक शुरू कर दी जाएगी। निकॉन के अनुसार एडब्ल्यु 1 दनिया का पहला वाटरप्रुफ और शॉकप्रुफ मिररलेस कैमरा है। इसमें 14.2 मेगापिक्सल सीएएक्स-फार्मेट सीमॉस सेंसर और उच्च क्वालिटी के इमेज के लिए निकॉन का एक्सपीड 3ए इमेज प्रोसेसिंग इंजन लगा है। साथ ही इसमें वाइड आइएसओ रेंज [164 से 6400] लगा है जिससे किसी भी तरह की रोशनी में अच्छी तस्वीरें आ सकती हैं। यह कैमरा निकॉन के एडवांस हाइब्रिड ऑटोफोकस सिस्टम के साथ आया है, जो आपके मुविंग एक्शन को कैप्चर कर सकता है। 11-27.5मिमी एफ/3.5-5.6 किट के साथ आने वाले निकॉन 1 एडब्ल्यू1 की कीमत 39,950 रुपये रखी गयी है। दसरा कैमरा है निकॉन वी3 जो काफी हल्के वजन का है। 1वी3 में एक्सपीड 4ए इमेज प्रोसेसर के साथ 18.4 एमपी सी-एक्स फार्मेट सीमॉस सेंसर है। इसका आइएसओ रेंज 160 से 12,800 है। इसमें हाइब्रिड एफ सिस्टम लगा है जिसमें 171 कंटास्ट-डिफेक्ट एफ प्वाइंट और 105 फेज डिटेक्ट एफ प्वाइंट है। 10-30 मिमी पीडी लेंस किट के साथ आने वाले इस कैमरे की कीमत 43,950 रुपये है। निकॉन 1 जे4 में 1 इंच का 18.4एमपी सीएक्स फार्मेट सेंसर है। निकॉन 1 जे4 में लगा हाइब्रिड एफ सिस्टम इसकी क्वालिटी में इजाफा करता है। 10-30 मिमी पीड़ी लेंस के साथ काले और सफेद रंग में यह कैमरा 24,950 रुपये में उपलब्ध है।

बेंगलुरू। आइपीएल-7 फाइनल में जीत के बाद इस टीम के सभी खिलाड़ी जश्न में डूबे दिखे, आखिर ये उनका दूसरा खिताब जो है वहीं अगर टीम के सबसे सफल गेंद्रबाज व टूर्नामेंट में 21 विकेट लेकर इस मामले में दूसरे नंबर पर रहने वाले कैरेबियाई स्पिनर सुनील नरेन की मानें तो इस बार की जीत, 2012 की खिताबी जीत से ज्यादा संतोषजनक है। नरेन ने कहा, 'ये साल और बेहतर था क्योंकि हमने 200 के लक्ष्य को हासिल किया जो कि आसान काम नहीं है। लड़कों ने इस जीत के लिए कड़ी मेहनत की थी और वे इस लम्हे के हकदार हैं। इस साल हमारी शुरुआत अच्छी नहीं रही लेकिन हमने लगातार नौ जीत हासिल करके टूर्नामेंट का अंत किया जो अद्भुत है। एक बार खिताब जीतना शानदार होता है लेकिन दो बार इसको अपने नाम करना एक अद्भुत

बंगलुरू। आइपीएल-7 फाइनल में जीत के बाद इस टीम के सभी खिलाड़ी जश्न में इबे दिखे, आखिर ये उनका दूसरा खिताब जो है वहीं अगर टीम के सबसे सफल गेंदबाज व दूर्नामेंट में 21 विकेट लेकर इस मामले में दूसरे नंबर पर रहने वाले कैरेबियाई स्पिनर सुनील नरेन की मानें तो इस बार की जीत, 2012 की खिताबी जीत से ज्यादा संतोषजनक है। नरेन ने कहा, 'ये साल और बेहतर था क्योंकि हमने 200 के लक्ष्य को हासिल किया जो कि आसान काम नहीं है। लड़कों ने इस जीत के लिए कड़ी मेहनत की थी और वे इस लम्हे के हकदार हैं। इस साल हमारी शुरुआत अच्छी नहीं रही लेकिन हमने लगातार नौ जीत हासिल करके टूर्नामेंट का अंत किया जो अद्भुत है। एक बार खिताब जीतना शानदार होता है लेकिन दो बार इसको अपने नाम करना एक अद्भुत सफलता है और शानदार अहसास है। केकेआर का हिस्सा बनकर बहुत अच्छा महसूस होता है और

फोटो में देखें, क्या हुआ जब ग्रांड फैशन इंवेट में Bollywood Divas ने रैंप पर उतरकर बिखेरे जलवे

गौरव गाथा

हिन्दी साहित्य को अपने अस्तित्व से गौरवान्वित करने वाली विशेष कहानियों के इस संग्रह में प्रस्तुत है— सैय्यद इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी'। यह संभवत: खड़ी बोली की पहली कहानी है और इसका रचनाकाल १८०३ ईस्वी के आसपास माना जाता है।

यह वह कहानी है कि जिसमें हिंदी छुट।

और न किसी बोली का मेल है न पुट।।

सिर झुकाकर नाक रगड़ता हूँ उस अपने बनानेवाले के सामने जिसने हम सब को बनाया और बात में वह कर दिखाया कि जिसका भेद किसी ने न पाया। आतियाँ जातियाँ जो साँसें हैं, उसके बिन ध्यान यह सब फाँसे हैं। यह कल का पुतला जो अपने उस खेलाड़ी की सुध रक्खे तो खटाई में क्यों पड़े और कड़वा कसैला क्यों हो। उस फल की मिठाई चक्खे जो बड़े से बड़े अगलों ने चक्खी है।

देखने को दो आँखें दीं और सुनने के दो कान।

नाक भी सब में ऊँची कर दी मरतों को जी दान।।

मिट्टी के बासन को इतनी सकत कहाँ जो अपने कुम्हार के करतब कुछ ताड़ सके। सच है, जो बनाया हुआ हो, सो अपने बनानेवालों को क्या सराहे और क्या कहे। यों जिसका जी चाहे, पड़ा बके। सिर से लगा पाँव तक जितने रोंगटे हैं, जो सबके सब बोल उठें और सराहा करें और उतने बरसों उसी ध्यान में रहें जितनी सारी नदियों में रेत और फूल फलियाँ खेत में हैं, तो भी कुछ न हो सके, कराहा करैं। इस सिर झुकाने के साथ ही दिन रात जपता हूँ उस अपने दाता के भेजे हुए प्यारे को जिसके लिये यों कहा है -

जो तू न होता तो मैं कुछ न बनाता; और उसका चचेरा भाई जिसका ब्याह उसके घर हुआ, उसकी सुरत मुझे लगी रहती है। मैं फूला अपने आप में नहीं समाता, और जितने उनके लड़के वाले हैं, उन्हीं को मेरे जी में चाह है। और कोई कुछ हो, मुझे नहीं भाता। मुझको उम्र घराने छूट किसी चोर ठग से क्या पड़ी! जीते और मरते आसरा उन्हीं सभों का और उनके घराने का रखता हूँ तीसों घड़ी।

डौल डाल एक अनोखी बात का

एक दिन बैठे-बैठे यह बात अपने ध्यान में चढ़ी कि कोई कहानी ऐसी किहए कि जिसमें हिंदवी छुट और किसी बोली का पुट न मिले, तब जाके मेरा जी फूल की कली के रूप में खिले। बाहर की बोली और गँवारी कुछ उसके बीच में न हो। अपने मिलने वालों में से एक कोई पढ़े-लिखे, पुराने-धुराने, डाँग, बूढ़े धाग यह खटराग लाए। सिर हिलाकर, मुँह धुधाकर, नाक भी चढ़ाकर, आँखें फिराकर लगे कहने - यह बात होते दिखाई नहीं देती। हिंदवीपन भी न निकले और भाखापन भी न हो। बस जैसे भले लोग अच्छे आपस में बोलते चालते हैं, ज्यों का त्यों वही सब डौल रहे और छाँह किसी की न हो, यह नही होने का। मैंने उनकी ठंडी साँस का टहोका खाकर झुँझलाकर कहा - मैं कुछ ऐसा बड़बोला नहीं जो राई को परबत कर दिखाऊँ और झूठ सच बोलकर उँगलियाँ नचाऊँ, और बे-सिर बे-ठिकाने की उलझी- सुलझी बातें सुनाऊँ, जो मुझ से न हो सकता तो यह बात मुँह से क्यों निकालता? जिस ढब से होता, इस बखेड़े को

गौरव गाथा

हिन्दी साहित्य को अपने अस्तित्व से गौरवान्वित करने वाली विशेष कहानियों के इस संग्रह में प्रस्तुत है— सैय्यद इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी'। यह संभवत: खड़ी बोली की पहली कहानी है और इसका रचनाकाल १८०३ ईस्वी के आसपास माना जाता है।

यह वह कहानी है कि जिसमें हिंदी छुट।

और न किसी बोली का मेल है न पुट॥

सिर झुकाकर नाक रगड़ता हूँ उस अपने बनानेवाले के सामने जिसने हम सब को बनाया और बात में वह कर दिखाया कि जिसका भेद किसी ने न पाया। आतियाँ जातियाँ जो साँसें हैं, उसके बिन ध्यान यह सब फाँसे हैं। यह कल का पुतला जो अपने उस खेलाड़ी की सुध रक्खे तो खटाई में क्यों पड़े और कड़वा कसैला क्यों हो। उस फल की मिठाई चक्खे जो बड़े से बड़े अगलों ने चक्खी है।

देखने को दो आँखें दीं और सुनने के दो कान।

नाक भी सब में ऊँची कर दी मरतों को जी दान॥

मिट्टी के बासन को इतनी सकत कहाँ जो अपने कुम्हार के करतब कुछ ताड़ सके। सच है, जो बनाया हुआ हो, सो अपने बनानेवालो को क्या सराहे और क्या कहे। यों जिसका जी चाहे, पड़ा बके। सिर से लगा पाँव तक जितने रोंगटे हैं, जो सबके सब बोल उठें और सराहा करें और उतने बरसों उसी ध्यान में रहें जितनी सारी निद्यों में रेत और फूल फिलयाँ खेत में हैं, तो भी कुछ न हो सके, कराहा करैं। इस सिर झुकाने के साथ ही दिन रात जपता हूँ उस अपने दाता के भेजे हुए प्यारे को जिसके लिये यों कहा है -

जो तू न होता तो मैं कुछ न बनाता; और उसका चचेरा भाई जिसका ब्याह उसके घर हुआ, उसकी सुरत मुझे लगी रहती है। मैं फूला अपने आप में नहीं समाता, और जितने उनके लड़के वाले हैं, उन्हीं को मेरे जी में चाह है। और कोई कुछ हो, मुझे नहीं भाता। मुझको उम्र घराने छूट किसी चोर ठग से क्या पड़ी! जीते और मरते आसरा उन्हीं सभों का और उनके घराने का रखता हूँ तीसों घड़ी।

डौल डाल एक अनोखी बात का

एक दिन बैठे-बैठे यह बात अपने ध्यान में चढ़ी कि कोई कहानी ऐसी किहए कि जिसमें हिंदवी छुट और किसी बोली का पुट न मिले, तब जाके मेरा जी फूल की कली के रूप में खिले। बाहर की बोली और गँवारी कुछ उसके बीच में न हो। अपने मिलने वालों में से एक कोई पढ़े-लिखे, पुराने-धुराने, डाँग, बूढ़े धाग यह खटराग लाए। सिर हिलाकर, मुँह थुथाकर, नाक भी चढ़ाकर, आँखें फिराकर लगे कहने - यह बात होते दिखाई नहीं देती। हिंदवीपन भी न निकले और भाखापन भी न हो। बस जैसे भले लोग अच्छे आपस में बोलते चालते हैं, ज्यों का त्यों वही सब डौल रहे और छाँह किसी की न हो, यह नहीं होने का। मैंने उनकी ठंडी साँस का टहोका खाकर झूँझलाकर कहा - मैं कुछ ऐसा बड़बोला नहीं जो राई को

टालता।

इस कहानी का कहनेवाला यहाँ आपको जताता है और जैसा कुछ उसे लोग पुकारते हैं, कह सुनाता है। दहना हाथ मुँह पर फेरकर आपको जताता हूँ, जो मेरे दाता ने चाहा तो यह ताव-भाव, राव-चाव और कूद-फाँद, लपट झपट दिखाऊँ जो देखते ही आप के ध्यान का घोड़ा, जो बिजली से भी बहुत चंचल अल्हड़पन में है, हिरन के रूप में अपनी चौकड़ी भूल जाय।

दुक घोड़े पर चढ़ के अपने आता हूँ मैं।

करतब जो कुछ है, कर दिखता हूँ मैं।।

उस चाहनेवाले ने जो चाहा तो अभी।

कहता जो कुछ हूँ, कर दिखाता हूँ मैं॥

अब आप कान रख के, आँखें मिला के, सम्मुख होके टुक इधर देखिए, किस ढंग से बढ़ चलता हूँ और अपने फूल के पंखड़ी जैसे होठों से किस किस रूप के फूल उगलता हूँ।

कहानी के जीवन का उभार और बोलचाल की दुलहिन का सिंगार

किसी देश में किसी राजा के घर एक बेटा था। उसे उसके माँ-बाप और सब घर के लोग कुँवर उदैभान करके पुकारते थे। सचमुच उसके जीवन की जोत में सूरज की एक स्रोत आ मिली थी। उसका अच्छापन और भला लगना कुछ ऐसा न था जो किसी के लिखने और कहने में आ सके। पंद्रह बरस भरके उसने सोलहवें में पाँव रक्खा था। कुछ यों ही सी मसें भीनती चली थीं। पर किसी बात के सोच का घर-घाट न पाया था और चाह की नदी का पाट उसने देखा न था। एक दिन हिरयाली देखने को अपने घोड़े पर चढ़के अठखेल और अल्हड़पन के साथ देखता भालता चला जाता था। इतने में जो एक हिरनी उसके सामने आई, तो उसका जी लोट पोट हुआ। उस हिरनी के पीछे सब छोड़ छाड़कर घोड़ा फेंका। कोई घोड़ा उसको पा सकता था? जब सूरज छिप गया और हिरनी आँखों से ओझल हुई, तब तो कुँवर उदैभान भूखा, प्यासा, उनींदा, जँभाइयाँ, अँगड़ाइयाँ लेता, हक्का बक्का होके लगा आसरा ढूँढने। इतने में कुछ एक अमराइयाँ देख पड़ी, तो उधर चल निकला; तो देखता है वो चालीस-पचास रंडियाँ एक से एक जोबन में अगली झूला डाले पड़ी झूल रही है और सावन गातियाँ हैं।

ज्यों ही उन्होंने उसको देखा - तू कौन? तू कौन? की चिंघाड़ सी पड़ गई। उन सभों में एक के साथ उसकी आँख लग गई।

कोई कहती थी यह उचक्का है।

कोई कहती थी एक पक्का है।

वहीं झूलेवाली लाल जोड़ा पहने हुए, जिसको सब रानी केतकी कहते थीं, उसके भी जी में उसकी चाह ने घर किया। पर कहने-सुनने को बहुत सी नाँह-नूह की और कहा - परबत कर दिखाऊँ और झूठ सच बोलकर उँगलियाँ नचाऊँ, और बे-सिर बे-ठिकाने की उलझी-सुलझी बातें सुनाऊँ, जो मुझ से न हो सकता तो यह बात मुँह से क्यों निकालता? जिस ढब से होता, इस बखेड़े को टालता।

इस कहानी का कहनेवाला यहाँ आपको जताता है और जैसा कुछ उसे लोग पुकारते हैं, कह सुनाता है। दहना हाथ मुँह पर फेरकर आपको जताता हूँ, जो मेरे दाता ने चाहा तो यह ताव-भाव, राव-चाव और कूद-फाँद, लपट झपट दिखाऊँ जो देखते ही आप के ध्यान का घोड़ा, जो बिजली से भी बहुत चंचल अल्हड़पन में है, हिरन के रूप में अपनी चौकड़ी भूल जाय।

टुक घोड़े पर चढ़ के अपने आता हूँ मैं।

करतब जो कुछ है, कर दिखता हूँ मैं॥

उस चाहनेवाले ने जो चाहा तो अभी।

कहता जो कुछ हूँ, कर दिखाता हूँ मैं॥

अब आप कान रख के, आँखें मिला के, सन्मुख होके टुक इधर देखिए, किस ढंग से बढ़ चलता हूँ और अपने फूल के पंखड़ी जैसे होठों से किस किस रूप के फूल उगलता हूँ।

कहानी के जीवन का उभार और बोलचाल की दुलहिन का सिंगार

किसी देश में किसी राजा के घर एक बेटा था। उसे उसके माँ-बाप और सब घर के लोग कुँवर उदैभान करके पुकारते थे। सचमुच उसके जीवन की जोत में सूरज की एक स्रोत आ मिली थी। उसका अच्छापन और भला लगना कुछ ऐसा न था जो किसी के लिखने और कहने में आ सके। पंद्रह बरस भरके उसने सोलहवें में पाँव रक्खा था। कुछ यों ही सी मसें भीनती चली थीं। पर किसी बात के सोच का घर-घाट न पाया था और चाह की नदी का पाट उसने देखा न था। एक दिन हरियाली देखने को अपने घोड़े पर चढ़के अठखेल और अल्हड़पन के साथ देखता भालता चला जाता था। इतने में जो एक हिरनी उसके सामने आई, तो उसका जी लोट पोट हुआ। उस हिरनी के पीछे सब छोड़ छाड़कर घोड़ा फेंका। कोई घोड़ा उसको पा सकता था? जब सूरज छिप गया और हिरनी आँखों से ओझल हुई, तब तो कुँवर उदैभान भूखा, प्यासा, उनींदा, जँभाइयाँ, अँगड़ाइयाँ लेता, हक्का बक्का होके लगा आसरा ढूँढने। इतने में कुछ एक अमराइयाँ देख पड़ी, तो उधर चल निकला; तो देखता है वो चालीस-पचास रंडियाँ एक से एक जोबन में अगली झूला डाले पड़ी झूल रही है और सावन गातियाँ हैं।

ज्यों ही उन्होंने उसको देखा - तू कौन? तू कौन? की चिंघाड़ सी पड़ गई। उन सभों में एक के साथ उसकी आँख लग गई।

कोई कहती थी यह उचक्का है।

कोई कहती थी एक पक्का है।

वहीं झूलेवाली लाल जोड़ा पहने हुए, जिसको सब रानी केतकी कहते थीं, उसके भी जी में उसकी चाह ने घर किया। पर कहने-सुनने को बहत सी नाँह-नृह की और कहा -

Consonant spacing	पपहपवपवहवव	Rakar spacing	पपळ्पवपवळ्वव	पपद्वपवपवद्ववव
पपकपवपवकवव	पपक्रपवपवक्रवव		पपक्षपवपवक्षवव	पपद्धपवपवद्धवव
पपखपवपवखवव	पपख़पवपवख़वव	पपक्रपवपवक्रवव	पपञ्चपवपवञ्चवव	पपद्मपवपवद्मवव
पपगपवपवगवव	पपग़पवपवग़वव	पपख्रपवपवख्रवव		पपद्मपवपवद्मवव
पपघपवपवघवव	पपज़पवपवज़वव	पपग्रपवपवग्रवव	Conjunct spacing	पपभपवपवभवव
पपङ्पवपवङ्गवव	पपड़पवपवड़वव	पपघ्रपवपवघ्रवव		पपद्पवपवद्दवव
पपचपवपवचवव	पपढ़पवपवढ़वव	पपङ्गपवपवङ्गवव	पपक्तपवपवक्तवव	पपभपवपवभवव
पपछपवपवछवव	पपफ़पवपवफ़वव	पपञ्चपवपवञ्चवव	पपड्यपवपवड्यवव	पपन्मपवपवन्मवव
	पपयपवपवयवव	पपछ्पवपवछ्रवव	पपछ्यपवपवछ्यवव	पपल्जपवपवल्जवव
पपजपवपवजवव	पपक्षपवपवक्षवव	पपञ्जपवपवञ्जवव	पपड्यपवपवड्यवव	पपल्थपवपवल्थवव
पपझपवपवझवव	पपज्ञपवपवज्ञवव	पपझपवपवझवव	पपञ्जपवपवञ्जवव	पपल्भपवपवल्भवव
पपञपवपवञवव		पपञ्जपवपवञ्जवव	पपञ्थपवपवज्थवव	पपल्मपवपवल्मवव
पपटपवपवटवव	Vowel spacing	पपट्रपवपवट्रवव	पपज्यपवपवज्यवव	पपल्यपवपवल्यवव
पपठपवपवठवव		पपठ्रपवपवठ्रवव	पपज्सपवपवज्सवव	पपल्मपवपवल्मवव
पपडपवपवडवव	पपञ्जपवपवञ्जवव	पपड्रपवपवड्रवव	पपछ्यपवपवछ्यवव	पपल्जपवपवल्जवव
पपढपवपवढवर्व	पपञ्जेपवपवञ्जेवव	पपद्रपवपवद्रवव	पपट्यपवपवट्यवव	पपल्भपवपवल्भवव
पपणपवपवणवव	पपॲपवपवॲवव	पपण्रपवपवण्रवव	पपठ्यपवपवठ्यवव	पपष्टपवपवष्टवव
पपतपवपवतवव	पपइपवपवइवव	पपत्रपवपवत्रवव	पपड्यपवपवड्यवव	पपष्टपवपवष्टवव
पपथपवपवथवव	पपईपवपवईवव	पपथ्रपवपवथ्रवव	पपट्यपवपवट्यवव	पपष्ठपवपवष्ठवव
पपदपवपवदवव	पपउपवपवउवव	पपद्रपवपवद्रवव	पपट्टपवपवट्टवव	पपह्नपवपवह्नवव
पपधपवपवधवव	पपऊपवपवऊवव	पपध्रपवपवध्रवव	पपद्रपवपवद्गवव	पपह्नपवपवह्नवव
पपनपवपवनवव	पपएपवपवएवव	पपन्नपवपवन्नवव	पपठुपवपवठ्ठवव	पपह्नपवपवह्नवव
पपपपवपवपवव	पपऐपवपवऐवव	पपप्रपवपवप्रवव	पपड्डपवपवड्ढवव	पपह्मपवपवह्मवव
पपफपवपवफवव	पपऍपवपवऍवव	पपफ्रपवपवफ्रवव	पपड्डपवपवड्डवव	पपह्यपवपवह्यवव
पपबपवपवबवव	पपऎपवपवऎवव	पपब्रपवपवब्रवव	पपढ्ढपवपवढ्ढवव	पपह्लपवपवह्नवव
पपभपवपवभवव	पपआपवपवआवव	पपभ्रपवपवभ्रवव	पपत्तपवपवत्तवव	पपह्वपवपवह्नवव
पपमपवपवमवव	पपओपवपवओवव	पपम्रपवपवम्रवव	पपत्खपवपवत्खवव	446444644
पपयपवपवयवव	पपऔपवपवऔवव	पपग्रपवपवग्रवव	पपत्थपवपवत्थवव	LI/Lluxerient energing
पपरपवपवरवव	पपऋपवपवऋवव	पपरूपवपवरूवव	पपत्नपवपवत्नवव	U/Uu variant spacing
पपलपवपवलवव	पपऋपवपवऋवव	पपल्लपवपवल्लवव	पपत्सपवपवत्सवव	पपहुपवपवहुवव
पपळपवपवळवव	पपलृपवपवलवव	पपत्रपवपवत्रवव	पपत्यपवपवत्यवव	पपहूपवपवहूवव
पपवपवपववव	पपॡपवपवॡवव	पपश्रपवपवश्रवव	पपद्धपवपवद्धवव	पपहृपवपवहृवव
पपशपवपवशवव		पपष्रपवपवष्रवव	पपद्गपवपवद्गवव	पपहृपवपवहृवव
पपषपवपवषवव		पपस्रपवपवस्रवव	 पपद्वपवपवद्ववव	पपहुँपवपवहुँवव
पपसपवपवसवव		पपह्रपवपवह्रवव	पपद्भपवपवद्भवव	पपहूपवपवहूवव
			••	6 6

	पपपौपपरौपपकौपप			ппоп птоп	
पपरुपवपवरुवव		Numeral spacing	पपफ, पवफ.	पपआ, पवआ.	पपद्द, पवद्द.
पपरूपवपवरूवव	पपपौंपपरौंपपकौंपप	००००१०१०११	पपब, पवब.	पपओ, पवओ.	पपष्ट, पवष्ट.
पपदुपवपवदुवव	पपपौँपपरौँपपकौँपप	0080808888	पपभ, पवभ.	पपऔ, पवऔ.	पपष्ट, पवष्ट.
पपदूपवपवदूवव		0070808788	पपम, पवम.	पपऋ, पवऋ.	पपष्ठ, पवष्ठ.
पपदृपवपवदृवव	पपपुपपरुपपकुपप	0030808388	पपय, पवय.	पपऋ, पवऋ.	पपह्न, पवह्न.
	पपपूपपरूपपकूपप		पपर, पवर.	पपल, पवल.	पपह्न, पवह्न.
Vowel sign spacing	पपपृपपरृपपकृपप	0080808888	पपल, पवल.	पपलृ, पवलृ.	पपह्न, पवह्न.
पपपंपपरंपपकंपप	पपपृपपरृपपकृपप	0040808488	पपळ, पवळ.		पपह्न, पवह्न.
पपपॅपपरॅपपकॅपप	पपपूरपपूरुपपकुपप	००६०१०१६११	पपव, पवव.		पपह्न, पवह्न.
पपपॅपपरॅंपपकॅपप	पपपूरिपपूरेपपक्रीपप	9909090000	पपश, पवश.	पपङ्ग, पवङ्ग.	
पपपॅपपरॅपपकॅपप	`E 'E 'E	००८०१०१८११	पपष, पवष.	पपछ्र, पवछ्र.	पपहु, पवहु.
पपपेपपरेपपकेपप	पपर्पपपर्रपपर्कपप	००९०१०१९११	पपसं, पवसं.	पपट्र, पवट्र.	पपहूँ, पवहूँ.
पपपेंपपरेंपपकेंपप	पपर्पंपपर्रंपपर्कंपप		पपह, पवह.	पपठ्र, पवठ्र.	पपह, पवह.
पपपॅंपपरॅंपपकॅंपप	पपर्पपपर्रपपर्कपप	Letter-punct spacing	पपक़, पवक़.	पपड्र, पवड्र.	पपह्नं, पवह्नं.
	पपर्पंपपर्रंपपर्कंपप	पपक, पवक.	पपख़, पवख़.	पपढ़, पवढ़.	पपहुँ, पवहुँ.
पपपेपपरेपपकेपप	पपर्पेपपर्रेपपर्केपप	पपख, पवख.	पपग़, पवग़.	पपद्र, पवद्र.	पपह्र, पवह्र.
पपपेंपपरेंपपकेंपप	पपर्पंपपर्रंपपर्केंपप	पपग, पवग.	पपज़, पवज़.	पपर्, पवर्.	पपरु, पवरु.
पपपेँपपरेँपपकेँपप	पपर्पेपपर्रेपपर्केपप		पपड़, पवड़.	पपह्न, पवह्न.	पपरू, पवरू.
पपपैपपरैपपकैपप	पपर्पंपपर्रंपपर्कंपप	पपघ, पवघ.	पपढ़, पवढ़.	पपळ्र, पवळ्र.	पपद्, पवद्.
पपपैंपपरैंपपकैंपप	पपर्पेपपर्रेपपर्केपप	पपङ, पवङ.	पपफ़, पवफ़.		~ ~
पपपैंपपरैंपपकैंपप	पपर्पंपपरेंपपर्कंपप	पपच, पवच.		पपक्त, पवक्त.	पपदू, पवदू.
	44444444444	पपछ, पवछ.	पपय, पवय.	पपड्य, पवड्य.	पपदृ, पवदृ.
पपपापपरापपकापप		पपज, पवज.	पपक्ष, पवक्ष.	पपछ्यं, पवछ्यं.	
पपपिपपरिपपकिपप	पपपऽपवपववऽवव	पपझ, पवझ.	पपज्ञ, पवज्ञ.	पपट्ट, पवट्ट.	-
पपपीपपरीपपकीपप	पप?पवपव?वव	पपञ, पवञ.		पपट्ठ, पवट्ठ.	पपकः; पवकः
पपपींपपरींपपकींपप	पपप:पवपवव:वव	पपट, पवट.	पपअ, पवअ.	पपठ्ठ, पवठ्ठ.	पपख; पवख:
पपपीँपपरीँपपकीँपप		पपठ, पवठ.	पपञॆु, पवञॆु.	पपडू, पवडू.	पपग; पवग:
पपपॉपपरॉपपकॉपप		पपड, पवड.	पपॲ, पवॲ.	पपडु, पवडु.	पपघ; पवघ:
पपपाँपपराँपपकाँपप		पपढ, पवढ.	पपइ, पवइ.	पपढु, पवढु.	पपङ; पवङ:
पपपौपपरौपपकौपप		पपण, पवण.	पपई, पवई.	पपद्ध, पवद्ध.	पपचः; पवचः
पपपोंपपरोंपपकोंपप		पपत, पवत.	पपउ, पवउ.		पपछ; पवछ:
पपपॉंपपरॉंपपकॉंपप		पपथं, पवथ.	पपऊ, पवऊ.	पपद्ग, पवद्ग.	पपजः; पवजः
पपपोपपरोपपकोपप		पपद, पवद.	पपए, पवए.	पपद्ध, पवद्ध.	पपझ; पवझ:
पपपोंपपरोंपपकोंपप		पपधं, पवधं.	पपऐ, पवऐ.	पपद्भ, पवद्भ.	पपञ; पवञ:
पपपोँपपरोँपपकोँपप		पपन, पवन.	पपऍ, पवऍ.	पपद्व, पवद्व.	पपट; पवट:
111111111111111111		पपप, पवप.	पपऎ, पवऎ.	पपद्ध, पवद्ध.	पपठ; पवठ:
		,			

पपड; पवड:	पपॲ; पवॲ:	पपड्ढः; पवड्ढः:	पपघ। पवघ:	पपड़। पवड़:	पपह्र। पवह्र:	पपरू। पवरू:
पपढः; पवढः:	पपइ; पवइ:	पपड्ड; पवड्ड:	पपङ। पवङ:	पपढ़। पवढ़:	पपळ्। पवळ्:	पपदु। पवदुः
पपणः; पवणः	पपई; पवई:	पपढु; पवढु:	पपच। पवच:	पपफ़ पवफ़:		पपदू। पवदू:
पपतः; पवतः	पपउ; पवउ:	पपद्धः; पवद्धः	पपछ। पवछ:	पपय्। पवयः	पपक्त। पवक्तः	पपदृ। पवदृ:
पपथ; पवथ:	पपऊ; पवऊ:	पपद्गः, पवद्गः	पपज। पवजः	पपक्ष। पवक्षः	पपड्य। पवड्य:	
पपद; पवद:	पपए; पवए:	पपद्धः, पवद्धः	पपझ। पवझ:	पपज्ञ। पवज्ञ:	पपछ्य। पवछ्य:	-
पपधः; पवधः	पपऐ; पवऐ:	पपद्भः; पवद्भः	पपञ। पवञ:		पपट्ट। पवट्ट:	पपक! पवक?
पपनः; पवनः	पपऍ; पवऍ:	पपद्वः, पवद्वः	पपट। पवट:	पपअ। पवअ:	पपट्ठ। पवट्ठ:	पपख! पवख?
पपप; पवप:	पपऎ; पवऎ:	पपद्धः; पवद्धः	पपठ। पवठ:	पपऄ। पवऄ:	पपठ्ठ। पवठ्ठ:	पपग्! पवग?
पपफ; पवफ:	पपआ; पवआ:	पपद्ः, पवद्दः	पपड। पवड:	पपॲ। पवॲ:	पपड्ढ। पवड्ढ:	पपघ! पवघ?
पपबः पवबः	पपओ; पवओ:	पपष्टः, पवष्टः	पपढ। पवढ:	पपइ। पवइ:	पपडू। पवडू:	पपङ! पवङ?
पपभ; पवभ:	पपऔ; पवऔ:	पपष्टः, पवष्टः	पपण। पवण:	पपई। पवई:	पपढू। पवढू:	पपच! पवच?
पपमः; पवमः	पपऋ; पवऋ:	पपष्ठ; पवष्ठ:	पपत। पवतः	पपउ। पवउ:	पपद्ध। पवद्धः	पपछ! पवछ?
पपयः पवयः	पपऋ; पवऋ:	पपह्नः; पवह्नः	पपथ। पवथ:	पपऊ। पवऊ:	पपद्ग। पवद्गः	पपज! पवज?
पपर; पवर:	पपलः; पवलः:	पपह्न; पवह्न:	पपद। पवद:	पपए। पवए:	पपद्व। पवद्वः	पपझ! पवझ?
पपल; पवल:	पपॡ; पवॡ:	पपह्न; पवह्न:	पपध। पवध:	पपऐ। पवऐ:	पपद्भ। पवद्भः	पपञ! पवञ?
पपळ; पवळ:		पपह्न; पवह्न:	पपन। पवन:	पपऍ। पवऍ:	पपद्व। पवद्वः	पपट! पवट?
पपवः पववः		पपह्नः; पवह्नः	पपप। पवप:	पपऎ। पवऎ:	पपद्ध। पवद्धः	पपठ! पवठ?
पपशः; पवशः	पपङ्ग; पवङ्ग:		पपफ। पवफः	पपआ। पवआ:	पपद्। पवद्दः	पपड! पवड?
पपषः; पवषः	पपछः; पवछः:	पपहु; पवहु:	पपब। पवब:	पपओ। पवओ:	पपष्ट। पवष्ट:	पपढ! पवढ?
पपसः; पवसः	पपट्र; पवट्र:	पपहूं; पवहूं:	पपभ। पवभ:	पपऔ। पवऔ:	पपष्ट। पवष्ट:	पपण! पवण?
पपहः; पवहः	पपठ्र; पवठ्र:	पपहः; पवहः:	पपम। पवम:	पपऋ। पवऋ:	पपष्ठ। पवष्ठः	पपत! पवत?
पपक़; पवक़:	पपड्र; पवड्र:	पपहृ; पवहृ:	पपय। पवय:	पपऋ। पवऋ:	पपह्न। पवह्न:	पपथ! पवथ?
पपख़; पवख़:	पपद्र; पवद्र:	पपहु; पवहु:	पपर। पवर:	पपल्। पवलः	पपह्न। पवह्न:	पपद! पवद?
पपगः; पवगः:	पपद्र; पवद्र:	पपहूँ; पवहूँ:	पपल। पवल:	पपॡ। पवॡ:	पपह्न। पवह्न:	पपध! पवध?
पपज़; पवज़:	पपर्; पवर्:	पपरु; पवरु:	पपळ। पवळ:		पपह्न। पवह्न:	पपन! पवन?
पपड़; पवड़:	पपह्र; पवह्र:	पपरू; पवरू:	पपव। पवव:		पपह्न। पवह्न:	पपप! पवप?
पपढ़; पवढ़:	पपळ्र; पवळ्र:	पपदु; पवदु:	पपश। पवश:	पपङ्ग। पवङ्गः		पपफ! पवफ?
पपफ़; पवफ़:		पपदू; पवदू:	पपष। पवष:	पपछ्र। पवछ्र:	पपहु। पवहु:	पपब! पवब?
पपयः; पवयः	पपक्तः; पवक्तः	पपदृः, पवदृः	पपस। पवस:	पपट्र। पवट्र:	पपहूँ। पवहूँ:	पपभ! पवभ?
पपक्ष; पवक्ष:	पपड्यः; पवड्यः		पपह। पवह:	पपठ्र पवठ्र:	पपहृ। पवहृ:	पपम्। पवम्?
पपज्ञ; पवज्ञ:	पपछ्य; पवछ्य:	-	पपक्र। पवक़:	पपड्र। पवड्र:	पपहृ। पवहृ:	पपय! पवय?
	पपट्टः, पवट्टः	पपक। पवकः	पपख़। पवख़:	पपद्र। पवद्र:	पपहुँ। पवहुँ:	पपर! पवर?
पपअ; पवअ:	पपट्ठः, पवट्ठः	पपख। पवख:	पपग्र। पवगः:	पपद्र। पवद्र:	पपहूँ। पवहूँ:	पपल! पवल?
पपऄ; पवऄ:	पपट्ठः, पवट्ठः	पपग। पवग:	पपज़। पवज़:	पपरू। पवरू:	पपरु। पवरु:	पपळ! पवळ?

पपव! पवव?	पपङ्र! पवङ्र?		पपफ-फपव	पपआ-आपव	पपद्द-द्दपव	"डपवपड"
पपश! पवश?	पपछ्रि! पवछ्रि?	पपहु! पवहु?	पपब-बपव	पपओ-ओपव	पपष्ट-ष्टपव	"ढपवपढ"
पपष्! पवष?	पपट्र! पवट्र?	पपहूं! पवहूं?	पपभ-भपव	पपऔ-औपव	पपष्ट-ष्टपव	"णपवपण"
पपस! पवस?	पपठ्र! पवठ्र?	पपहृं! पवहृं?	पपम-मपव	पपऋ-ऋपव	पपष्ठ-ष्ठपव	"तपवपत"
पपह! पवह?	पपड्र! पवड्र?	पपहूं! पवहूं?	पपय-यपव	पपऋ-ऋपव	पपह्न-ह्नपव	"थपवपथ"
पपक़! पवक़?	पपद्र! पवद्र?	पपह्रुं! पवह्रुं?	पपर-रपव	पपल्-लुपव	पपह्न-ह्नपव	"दपवपद"
पपख़! पवख़?	पपद्र! पवद्र?	पपहूं! पवहूं?	पपल-लपव	पपॡ-ॡपव	पपह्न-ह्नपव	"धपवपध"
पपग़! पवग़?	पपरू! पवरू?	पपरुं! पवरुं?	पपळ-ळपव		पपह्न-ह्नपव	"नपवपन"
पपज़! पवज़?	पपह्ने! पर्वह्न?	पपरू! पवरू?	पपव-वपव		पपह्न-ह्नपव	"पपवपप"
पपड़! पवड़?	पपळू! पवळू?	पपदु! पवदु?	पपश-शपव	पपङ्र–ङ्रपव	, ,	"फपवपफ"
पपढ़! पवढ़?		पपदूं! पवदूं?	पपष-षपव	पपछ्र-छ्रपव	पपहु-हुपव	"बपवपब"
पपफ़! पवफ़?	पपक्त! पवक्त?	पपदृ! पवदृ?	पपस-सपव	पपट्र-ट्रपव	पपहूँ-हूँपव	"भपवपभ"
पपय़! पवय़?	पपड्य! पवड्य?		पपह-हपव	पपठ्र-ठ्रपव	पपह्र–हृपव	"मपवपम"
पपक्ष! पवक्ष?	पपछ्य! पवछ्य?	-	पपक़-क़पव	पपड्र-ड्रपव	पपह्न-हृपव	"यपवपय"
पपज्ञ! पवज्ञ?	पपटृ! पवटृ?	पपक-कपव	पपख़-ख़पव	पपद्र-द्रपव	पपहुँ-हुपव	"रपवपर"
	पपट्ट! पवट्ट?	पपख-खपव	पपग्र-ग़पव	पपद्र-द्रपव	पपहूँ-हूँपव	"लपवपल"
पपअ! पवअ?	पपठ्ठ! पवठ्ठ?	पपग-गपव	पपज़-ज़पव	पपऱ्-ऱ्रपव	पपरुं–रुपव	"ळपवपळ"
पपऄ! पवऄं?	पपड्ढ! पवड्ढ?	पपघ-घपव	पपड़-ड़पव	पपह्र-ह्रपव	पपरू-रूपव	"वपवपव"
पपॲ! पवॲ?	पपड्डु! पवड्डु?	पपङ-ङपव	पपढ़-ढ़पव	पपळ्-ळ्पव	पपदु-दुपव	"शपवपश"
पपइ! पवइ?	पपढूं! पवढूं?	पपच-चपव	पपफ़-फ़पव		पपदू-दूपव	"षपवपष"
पपई! पवई?	पपद्धे! पवद्धे?	पपछ-छपव	पपय-य़पव	पपक्त-क्तपव	पपदृ–दृपव	"सपवपस"
पपउ! पवउ?	पपद्ग! पवद्ग?	पपज-जपव	पपक्ष-क्षपव	पपड्य-ड्यपव	c c	"हपवपह"
पपऊ। पवऊ?	पपद्ध! पवद्ध?	पपझ-झपव	पपज्ञ-ज्ञपव	पपछ्य-छ्यपव	-	"क्रपवपक़"
पपए! पवए?	पपद्भ! पवद्भ?	पपञ-अपव		पपट्ट-ट्टपव	"कपवपक"	"ख़पवपख़"
पपऐ! पवऐ?	पपद्ध! पवद्ध?	पपट-टपव	पपअ-अपव	पपट्ठ-हुपव	"खपवपख"	"गुपवपग़"
पपऍ! पवऍ?	पपद्ध! पवद्ध?	पपठ-ठपव	पपॐ-अपव	पपष्ठ-ष्ठपव	"गपवपग"	"ज़पवपज़"
पपऎ! पवऎ?	पपद्द! पवद्द?	पपड-डपव	पपॲ-ॲपव	पपड्ड-ड्डपव	"घपवपघ"	"ड़पवपड़"
पपआ! पवआ?	पपष्ट! पवष्ट?	पपढ-ढपव	पपइ-इपव	पपड्ड-ड्डपव	"ङपवपङ"	"ढ़पवपढ़"
पपओ! पवओ?	पपष्ट! पवष्ट?	पपण-णपव	पपई–ईपव	पपढ्ढ-ढूपव	"चपवपच"	"फ़पवपफ़"
पपऔ! पवऔ?	पपष्ठ! पवष्ठ?	पपत-तपव	पपउ-उपव	पपद्ध-द्धपव	"छपवपछ"	"युपवपयः"
पपऋ! पवऋ?	पपह्न! पवह्न?	पपथ-थपव	पपऊ-ऊपव	पपद्ग-द्गपव	"जपवपज"	"क्षपवपक्ष"
पपऋ! पवऋ?	पपत्न्। पवत्न?	पपद-दपव	पपए-एपव	पपद्ध-द्वपव	"झपवपझ"	"ज्ञपवपज्ञ"
पपलृ! पवलृ?	पपह्न! पवह्न?	पपध-धपव	पपऐ-ऐपव	पपद्भ-द्भपव	"ञपवपञ"	
पपॡ! पवॡ?	पपह्न! पवह्न?	पपन-नपव	पपऍ-ऍवव	पपद्व-द्वपव	"टपवपट"	"अपवपअ"
	पपह्न! पवह्न?	पपप-पपव	पपऎ-ऎपव	पपद्ध-द्धपव	"ठपवपठ"	"ऄपवपऄ"

"ॲपवपॲ"	"डुपवपड्ड"	Num nunct spacing	li Vowel sign - base
"इपवपइ"	इन्द्रन् <u>ड</u> "ढूपवपढू"	Num-punct spacing	
"ईपवपई"	"द्धपवपद्ध"	पवप ₹१०१ वपव	पपिकपपिकंपपिकंपप
"उपवपउ"	"द्गपवपद्ग"	पवप ₹२०१ वपव	पपखिपपखिंपपर्खिपप
"ऊपवपऊ"		पवप ₹३०१ वपव	पपगिपपगिंपपर्गिपप
"एपवपए"	"द्वपवपद्व" "नगनगन"	पवप ₹४०१ वपव	पपघिपपघिंपपर्घिपप
"ऐपवपऐ"	"द्भपवपद्भ" "रमनगर"	पवप ₹५०१ वपव	पपङ्गिपपङ्गिपपर्ङिपप
"ऍपवपऍवव	"द्वपवपद्व" "नगनगन"	पवप ₹६०१ वपव	पपचिपपचिंपपर्चिपप
"ऎपवपऎ"	"द्धपवपद्ध"	पवप ₹७०१ वपव	पपछिपपछिंपपर्छिपप
	"द्दपवपद्द"	पवप ₹८०१ वपव	पपजिपपजिंपपर्जिपप
"आपवपआ"	" <u></u> " " " " " " " " " " " " " " " " " "	पवप ₹९०१ वपव	पपझिपपझिंपपर्झिपप
"ओपवपओ"	" <u></u> " " " " " " " " " " " " "		पपञिपपञिंपपर्ञिपप
"औपवपऔ"	" 8 पवप 8 "	000,080,088	पपटिपपटिंपपर्टिपप
" ''''''''''	"ह्रपवपह्न"	008,080,888	पपठिपपठिंपपर्ठिपप
"ऋपवपऋ" ""	"ह्रपवपह्न"	007,080,788	पपडिपपडिंपपर्डिपप
"लुपवपल्"	"ह्नपवपह्न"	003,080,388	पपढिपपढिंपपर्ढिपप
"ॡपवपॡ"	"ह्रपवपह्न"	००४,०१०,४११	पपणिपपणिंपपर्णिपप
""	"ह्वपवपह्न"	004,080,488	पपतिपपतिंपपर्तिपप
"ङ्रपवपङ्र"	U -11-11-1 U	००६,०१०,६११	पपथिपपथिंपपर्थिपप
"छ्रपवपछ्र"	"हुपवपहु"	006,080,088	पपदिपपदिंपपर्दिपप
"ट्रपवपट्र"	"हूपवपहू"	००८,०१०,८११	पपधिपपधिंपपर्धिपप
" <u>д</u> чачд"	"हपवपह"	009,080,988	पपनिपपनिंपपर्निपप
"ड्रपवपड्र"	"हृपवपहृ"	,, , , , , , ,	पपपिपपपिंपपर्पिपप
"द्रपवपद्र"	"हुपवपहु"	000.080.088	पपफिपपफिंपपर्फिपप
"द्रपवपद्र"	"हूपवपहू" ""	008.080.888	पपबिपपबिंपपर्बिपप
"ऱ्पवपऱ्" "	"रुपवपरु"	007.080.788	पपभिपपभिंपपर्भिपप
"ह्रपवपह्र" "	"रूपवपरू"	003.080.388	पपमिपपमिंपपर्मिपप
"ळ्पवपळ्"	"दुपवपदु"	00%.080.888	पपयिपपयिंपपर्यिपप
	"दूपवपदू"	004.080.488	पपरिपपरिंपपरिंपप
"क्तपवपक्त"	"दृपवपदृ"	००६.०१०.६११	पपलिपपलिंपपर्लिपप
"ङ्यपवपङ्य"		006'080'088	पपळिपपळिंपपळिंपप
"छ्यपवपछ्य"		00८.0१०.८११	पपविपपविंपपर्विपप
"ट्रपवपट्ट" "		009.080.988	पपशिपपशिंपपर्शिपप
"हुपवपहु"		1. 1 .111	पपषिपपषिंपपर्षिपप
"gपवपg"			पपसिपपसिंपपर्सिपप
"हुपवपड्ड"			

पपहिपपहिंपपर्हिपप पपक्षिपपक्षिंपपर्क्षिपप पपज्ञिपपज्ञिंपपर्ज्ञिपप

Ii Vowel sign clusters	पपक्त्विपप	पपर्ग्भिपप	पपङ्गिपप	पपर्ज्किपप	पपर्टीपप	पपर्लिपप	पपर्धिपप
	पपिक्र्यिपप	पपर्ग्मिपप	पपङ्गीपप	पपर्ज्जिपप	पपटिर्वेपप	पपर्त्यिपप	पपर्द्रिपप
पपर्क्किपप	पपक्स्टिपप	पपर्ग्यिपप	पपङ्घिपप	पपर्ज्झिपप	पपट्वींपप	पपर्त्रिपप	पपर्द्विपप
पपिक्खिपप	पपक्स्डिपप	पपर्ग्रिपप	पपङ्घींपप	पपर्ज्ञिपप	पपर्ट्रिपप	पपर्ल्लिपप	पपर्द्ध्यिपप
पपर्कािपप	पपक्स्तिपप	पपर्ग्लिपप	पपङ्चिपप	पपर्ज्तिपप	पपर्ठीपप	पपर्त्विपप	पपर्द्र्व्रिपप
पपर्क्चिपप	पपिक्स्पपप	पपर्ग्विपप	पपर्ङ्क्षपप	पपर्ज्दिपप	पपर्व्रिपप	पपर्त्सिपप	पपर्द्ऱ्यिपप
पपर्क्छिपप पपर्क्जिपप	पपक्रिप्पपप	पपर्ग्सिपप	पपङ्क्रीपप	पपर्ज्निपप	पपर्वठ्यपप	पपत्क्यिपप	पपर्ध्किपप
पपक्झिपप पपक्झिपप	पपर्क्प्रिपप	पपग्ध्यिपप	पपङ्क्रिपप	पपर्ज्बिपप	पपर्ड्डिपप	पपर्क्रिपप	पपर्ध्धिपप
पपक्रिपप पपर्क्टिपप	पपिकस्प्लीपप	पपग्ध्विपप	पपर्झिपप	पपर्ज्मिपप	पपर्ड्डिपप	पपर्त्सिपप	पपर्ध्निपप
पपक्ठिपप पपक्ठिपप	पपर्ख्खिपप	पपग्र्न्यिपप	पपर्ङ्यिपप	पपर्ज्यिपप	पपर्ड्रिपप	पपर्त्खिपप	पपर्ध्यिपप
पपक्रिंपप पपर्क्डिपप	पपर्ख्टिपप	पपग्भ्यपप	पपर्ङ्रिपप	पपर्ज्जिपप	पपर्ड्डियपप	पपर्त्ख्रिपप	पपर्ध्रिपप
पपर्क्डिपप पपर्क्डिपप	पपर्ख्विपप	पपर्ग्रिपप	पपर्च्किपप	पपर्ज्लिपप	पपर्ढ्विपप	पपर्त्ख्रिपप	पपर्ध्लिपप
पपक्णिपप पपक्णिपप	पपर्ख्णिपप	पपग्म्यिपप	पपर्च्खिपप	पपर्ज्विपप	पपर्ट्घीपप	पपिन्र्यिपप	पपर्ध्विपप
पपक्तिपप	पपर्ख्तिपप	पपग्ल्यिपप	पपर्च्चिपप	पपर्झ्किपप	पपर्द्विपप	पपर्त्प्रिपप	पपर्ध्सिपप
पपर्क्थिपप	पपर्ख्दिपप	पपर्ध्यिपप	पपर्च्टिपप	पपर्झ्गिपप	पपर्ढ्यिपप	पपर्टिल्पप	पपर्न्किपप
पपर्क्टिपप	पपर्ख्निपप	पपर्घ्जिपप	पपर्च्छिपप	पपर्झ्यिपप	पपर्विद्यपप	पपर्क्यिपप	पपर्न्खिपप
पपर्क्निपप	पपर्खिपप	पपर्घ्टिपप	पपर्च्डिपप	पपर्झिपप	पपर्ण्टिपप	पपित्स्र्नेपप	पपर्न्चिपप
पपर्क्पिपप	पपर्खिपप	पपर्घ्विपप	पपर्च्हिपप	पपर्झ्तिपप	पपर्ण्टीपप	पपित्स्यिपप	पपन्छिंपप
पपर्क्षिपप	पपर्ख्यिपप	पपर्घ्डिपप	पपर्च्णिपप	पपर्झ्निपप	पपर्ण्ठिपप	पपित्स्विपप	पपर्न्जिपप
पपिकर्बिपप	पपर्ख्रिपप	पपिर्घ्णपप	पपर्च्तिपप	पपर्झ्यिपप	पपर्ण्डिपप	पपित्स्न्यपप	पपर्न्झिपप
पपर्क्षिपप	पपर्ख्लिपप	पपर्घ्तिपप	पपर्च्थिपप	पपर्झिपप	पपर्ण्डिपप	पपर्थ्किपप	पपर्न्टिपप
पपर्क्मिपप	पपर्ख्विपप	पपर्घ्दिपप	पपर्च्दिपप	पपर्झ्लिपप	पपर्णिपप	पपर्थ्यिपप	पपर्न्ठिपप
पपर्क्यिपप	पपर्ख्शिपप	पपर्घ्निपप	पपर्च्धिपप	पपर्झ्विपप	पपर्ण्तिपप	पपर्ध्मिपप	पपर्न्डिपप
पपर्क्रिपप	पपर्खिपप	पपर्घ्बपप	पपर्च्निपप	पपर्झिपप	पपर्ण्यिपप	पपर्थ्यिपप	पपर्न्हिपप
पपर्क्लिपप	पपिखर्यपप	पपर्घ्मिपप	पपर्च्यिपप	पपर्ञ्चिपप	पपर्णिपप	पपर्श्रिपप	पपर्न्तिपप
पपर्क्विपप	पपर्ख्यिपप	पपर्घ्यिपप	पपर्च्चिपप	पपर्ञ्जिपप	पपर्ण्विपप	पपर्ध्लिपप	पपर्न्थिपप
पपक्शिपप	पपर्ग्किपप	पपर्घ्रिपप	पपर्च्लिपप	पपर्ञ्शिपप	पपर्त्किपप	पपर्ध्विपप	पपर्न्दिपप
पपर्क्षिपप	पपर्गिपप	पपर्घ्लिपप	पपर्च्चिपप	पपर्ज्यिपप	पपर्त्खिपप	पपर्ध्सिपप	पपर्म्धिपप
पपक्सिंपप	पपर्ग्जिपप	पपर्घ्विपप	पपर्च्सिपप	पपञ्जिर्यपप	पपर्त्तिपप	पपर्द्गिपप	पपर्निपप
पपर्क्हिपप	पपर्ग्णिपप	पपर्घ्सिपप	पपर्चिपप	पपर्ट्टिपप	पपर्स्थिपप	पपर्द्धिपप	पपर्न्पिपप
पपिक्ळिपप	पपर्ग्तिपप	पपिष्ट्यिपप	पपर्च्मिपप	पपर्टीपप	पपर्त्निपप	पपर्दिपप	पपर्न्फिपप
पपक्किर्यपप	पपर्ग्दिपप	पपङ्किपप	पपर्च्यिपप	पपर्हिपप	पपर्त्पिपप	पपर्द्धिपप	पपर्न्बिपप
पपर्क्त्रिपप	पपर्ग्धिपप	पपङ्र्कीपप	पपिर्छ्यिपप	पपर्हीपप	पपर्त्फिपप	पपर्द्विपप	पपर्मिपप
पपक्रियंपप	पपर्ग्निपप	पपङ्खिंपप	पपर्छिपप	पपर्ट्यिपप	पपर्त्बिपप	पपर्द्धिपप	पपर्मिपप
	पपर्ग्बिपप	पपङ्खींपप	पपछिर्वपप	पपर्ट्रिपप	पपर्सिपप	पपर्झिपप	पपर्न्यिपप

पपर्न्रिपप	पपर्प्निपप	पपर्म्भिपप	पपर्ल्दिपप	पपर्स्टिपप	पपळ्रियपप
पपन्लिपप	पपर्प्पिपप	पपर्म्मिपप	पपर्ल्पिपप	पपस्ठिपप	पपळिर्पपप
पपर्न्विपप	पपर्प्भिपप	पपर्म्यिपप	पपर्ल्फिपप	पपर्स्डिपप	पपळ्विपप
पपर्न्सिपप	पपर्मिपप	पपर्म्रिपप	पपर्ल्बिपप	पपस्टिंपप	पपर्स्यिपप
पपर्न्हिपप	पपर्प्यिपप	पपर्म्लिपप	पपर्ल्भिपप	पपर्स्तिपप	पपर्स्मिपप
पपन्भिर्यपप	पपर्प्रिपप	पपर्म्विपप	पपर्ल्मिपप	पपर्स्थिपप	पपर्द्विपप
पपन्भिर्वेपप	पपर्प्लिपप	पपम्शिपप	पपर्ल्यिपप	पपर्स्दिपप	
पपन्म्यिपप	पपर्प्विपप	पपर्म्सिपप	पपर्लिपप	पपर्स्निपप	
पपन्स्टिपप	पपर्ष्मिपप	पपर्म्हिपप	पपर्ल्विपप	पपर्स्पिपप	
पपन्स्यिपप	पपर्प्सिपप	पपम्म्यिपप	पपर्ल्सिपप	पपर्स्फिपप	
पपन्ह्यिपप	पपर्प्ळिपप	पपर्म्प्रिपप	पपर्ल्हिपप	पपर्स्बिपप	
पपन्ज्यिपप	पपर्प्त्यिपप	पपम्ब्यिपप	पपिल्र्यिपप	पपर्स्मिपप	
पपन्क्सिपप	पपर्फ्किपप	पपर्म्ब्रिपप	पपर्ल्ह्यिपप	पपर्स्यिपप	
पपन्त्र्यपप	पपर्प्जिपप	पपम्भिर्यपप	पपल्किर्यपप	पपर्स्रिपप	
पपन्त्सिपप	पपर्फ्टिपप	पपर्म्भिपप	पपल्थ्यिपप	पपस्लिपप	
पपन्थ्यिपप	पपर्फ्तिपप	पपम्भिर्वेपप	पपर्ल्द्रिपप	पपर्स्विपप	
पपन्थिवपप	पपर्प्दिपप	पपर्य्यिपप	पपर्श्किपप	पपस्सिपप	
पपर्न्द्रिपप	पपर्म्निपप	पपर्ग्रिपप	पपर्श्खिपप	पपस्म्यिपप	
पपर्न्ह्रिपप	पपर्फिपप	पपर्लिपप	पपश्चिंपप	पपर्स्क्रिपप	
पपन्ध्यिपप	पपर्मिपप	पपर्व्यिपप	पपश्छिपप	पपस्त्र्यपप	
पपर्स्थिपप	पपर्प्यिपप	पपर्विपप	पपर्श्टिपप	पपस्थ्यिपप	
पपर्म्पिपप	पपर्फ्रिपप	पपर्व्लिपप	पपर्श्तिपप	पपस्म्यिपप	
पपन्स्म्यपप	पपर्फ्लिपप	पपर्व्सिपप	पपर्श्निपप	पपस्त्विपप	
पपर्प्किपप	पपफ्शिपप	पपर्व्हिपप	पपर्श्बिपप	पपर्स्प्रिपप	
पपर्झिपप	पपर्भिनपप	पपर्ल्किपप	पपर्श्मिपप	पपस्न्यिपप	
पपर्प्टिपप	पपर्भ्यिपप	पपर्ल्खिपप	पपर्श्यिपप	पपर्ह्लिपप	
पपर्प्विपप	पपर्भिपप	पपर्लिपप	पपर्श्रिपप	पपर्ह्तिपप	
पपर्प्टीपप	पपभ्र्तिपप	पपर्ल्चिपप	पपर्श्लिपप	पपर्ह्यिपप	
पपर्ष्डिपप	पपर्भ्विपप	पपर्ल्जिपप	पपर्श्विपप	पपर्ह्मिपप	
पपर्प्हिपप	पपर्भ्यिपप	पपर्ल्टिपप	पपश्शिपप	पपर्हम्यिपप	
पपर्णिपप	पपर्म्तिपप	पपर्ल्ठिपप	पपर्श्चिपप	पपर्ह्निपप	
पपर्प्तिपप	पपर्म्दिपप	पपर्ल्डिपप	पपर्स्किपप	पपर्ह्रिपप	
पपर्ष्यिपप	पपर्म्निपप	पपर्ल्हिपप	पपर्स्खिपप	पपर्ह्मिपप	
पपर्प्दिपप	पपर्म्पिपप	पपर्लिपप	पपस्छिपप	पपर्ह्मिपप	
पपर्ष्धिपप	पपर्म्बिपप	पपर्ल्थिपप	पपस्जिपप	पपर्ह्विपप	

Half-to-base kerns

पपक्कपपक्खपपक्गपपक्घपपक्डपपक्चप पक्छपपक्जपपक्झपपक्ञपपक्टपपक्ठपपक्डप पक्डपपक्णपपक्तपपक्थपपक्दपपक्थपपक्नप पक्नपपक्पपपक्फपपक्खपपक्भपपक्मपपक्यप पक्रपपक्सपपक्लपपक्ळपपक्छपपक्वप पक्शपपक्षपपक्सपपक्हपपक्कपपक्खपपक्गप पक्जपपक्डपपक्टपपक्सपपक्सपप

पपक्कपपख्वपपखापपख्वपपख्वप पख्ठपपख्जपपख्वपपख्नपपख्टपपख्ठपपख्डप पद्धपपख्णपपख्तपपख्यपपख्टपपख्यपपख्मपपख्मपपख्यप पख्नपपख्मपपख्कपपख्कपपख्मपपख्मप पख्रपपख्नपपख्कपपख्कपपख्नपपखाप पख्मपपख्नपपख्कपपख्कपपख्नप पख्नपपख्नपपख्कपपख्कपपख्नप

पपग्कपपग्खपपगगपपग्घपपग्ङपपगचप पग्छपपग्जपपग्झपपग्ञपपग्टपपग्ठपपग्डप पग्ढपपग्णपपग्तपपग्थपपग्दपपग्धपपग्नप पग्नपपग्पपपग्फपपग्बपपग्भपपगमपपग्यपपग्रप पग्सपपग्हपपग्कपपग्खपपगगपपग्जपपग्डप पग्सपपग्हपपग्कपपग्खपपगगप्रपपग्जपपग्डप पग्दपपग्फपपग्यपप

पपच्कपपच्खपपचापपच्चपपच्छपपच्चप पच्छपपच्जपपच्झपपच्जपपच्टपपच्छपपच्छप पच्लपपच्णपपच्तपपच्थपपच्यप पच्नपपच्यपपच्कपपच्खपपच्यप पच्चपपच्यपपच्लपपच्ळपपच्छप पच्शपपच्यपपच्सपपच्लपपच्लपपच्यप पच्जपपच्लपपच्लपपच्लपपच्लपप्लयप पच्जपपच्लपपच्लपपच्लपपच्लपप पपन्कपपन्खपपन्गपपन्छपपन्छपपन्छप पन्छपपन्जपपन्झपपन्अपपन्टपपन्छप पन्नपपन्मपपन्कपपन्अपपन्यप पन्नपपन्मपपन्कपपन्अपपन्अपपन्यप पन्नपपन्सपपन्कपपन्कपपन्यपपन्थप पन्नपपन्सपपन्कपपन्कपपन्यपपन्नप पन्नपपन्सपपन्कपपन्यपप्

पपछकपपछखपपछगपपछघपपछङपपछचप पछछपपछजपपछझपपछञपपछटपपछठप पछडपपछढपपछणपपछतपपछथपपछदप पछधपपछनपपछनपपछपपपछफपपछबप पछभपपछनपपछ्यपपछ्रपपछ्रपपछलप पछळपपछळपपछवपपछशपपछ्सप पछहपपछक्रपपछखपपछग्रपपछजपपछड़प पछढपपछक्रपपछ्यपप

पपज्कपपज्खपपज्गपपज्यपपज्झपपज्यप पज्छपपज्जपपज्झपपज्ञपपज्डप पज्लपपज्णपपज्तपपज्थपपज्दपपज्धपपज्नप पज्नपपज्पपपज्कपपज्खपपज्भपपज्यप पज्रपपज्लपपज्लपपज्ळपपज्ळपपज्ञप पज्षपपज्सपपज्हपपज्कपपज्खपपज्ञाप पज्डपपज्दपपज्कपपज्झपप

पपइकपपइखपपइगपपइघपपइङपपइचप पइछपपइजपपइझपपइञपपइटपपइठपपइडप पइढपपइणपपइतपपइथपपइदपपइधपपइनप पइनपपइपपपइफपपइबपपइभपपइमपपइयप पझपपइसपपइलपपइळपपइळपपइवपपइशप पइषपपइसपपइहपपइक्रपपइखपपइग्रापपइजप पइडपपइढपपइफ़पपइयपप पञ्कपपञ्खपपञ्गपपञ्चपपञ्चप पञ्कपपञ्जपपञ्कपपञ्कपपञ्चप पञ्कपपञ्जपपञ्कपपञ्कपपञ्चपपञ्चप पञ्कपपञ्जपपञ्कपपञ्कपपञ्चपपञ्चप पञ्कपपञ्जपपञ्कपपञ्कपपञ्चपपञ्चप पञ्कपपञ्कपपञ्कपपञ्कपपञ्चपपञ्चप पञ्कपपञ्कपपञ्चपपञ्चप

पपट्कपपट्खपपट्गपपट्घपपट्ङपपट्चप पट्छपपट्जपपट्झपपट्ञपपट्टप पट्ढपपट्णपपट्तपपट्थपपट्दपपट्धपपट्नप पट्नपपट्पपपट्फपपट्बपपट्भपपट्मपपट्यप पट्नपपट्पपट्लपपट्ळपपट्कपपट्वपपट्शप पट्षपपट्सपपट्हपपट्कपपट्खपपट्गपपट्जप पट्षपपट्सपपट्हपपट्कपपट्खपपट्गपपट्जप पट्डपपट्ढपपट्फपपट्सपप

पपठ्कपपठ्खपपठ्गपपठ्घपपठ्डपपठ्चप पठ्छपपठ्जपपठ्झपपठ्ञपपठ्टपपठ्ठप पठ्ढपपठ्णपपठ्तपपठ्थपपठ्दपपठ्थपपठ्नप पठ्तपपठ्पपपठ्फपपठ्बपपठ्भपपठ्मपपठ्यप पठ्नपपठ्रपपठ्लपपठ्ळपपठ्खपपठ्वपपठ्शप पठ्षपपठ्सपपठ्हपपठ्कपपठ्खपपठ्ञप पठ्डपपठ्सपपठ्सपपठ्झप

पपड्कपपड्खपपड्गपपड्घपपड्डपपड्चप पड्छपपड्जपपड्झपपड्ञपपड्टपपड्ठपपड्डुप पड्डपपड्णपपड्तपपड्थपपड्दपपड्धपपड्नप पड्नपपड्पपपड्फपपड्बपपड्भपपड्मपपड्यप पद्मपड्रपपड्लपपड्ळपपड्ळपपड्वपपड्शप पड्षपपड्सपपड्हपपड्ळपपड्खपपड्गपपड्जप पड्डपपड्सपपड्हपपड्झपप

पपढ्कपपढ्खपपढ्गपपढ्घपपढ्डपपढ्चप पढ्छपपढ्जपपढ्झपपढ्ञपपढ्टपपढ्ठपपढ्डप पढ्डपपढ्णपपढ्तपपढ्थपपढ्दपपढ्धपपढ्नप पढ्नपपढ्पपपढ्फपपढ्बपपढ्भपपढ्मपपढ्यप पद्रपपढ्रपपढ्लपपढ्ळपपढ्अपपढ्नपपढ्शप पढ्षपपढ्सपपढ्हपपढ्कपपढ्खपपढ्गपपढ्जप पढडपपढसपपढ्सपपव्रापप

पपत्कपपत्खपपतापपत्यपपत्डपपत्वपपत्छप पत्जपपत्झपपत्ञपपत्टपपत्ठपपत्डपपत्खपपत्णप पत्तपपत्थपपत्दपपत्थपपत्नपपत्नपपत्पपत्पप पत्बपपत्भपपत्मपपत्यपपत्रपपत्रपपत्लपपत्ळप पत्ळपपत्वपपत्शपपत्सपपत्सपपत्हपपत्कपपत्खप पतापपत्जपपत्डपपत्कपपत्सपपत्यपप

पपद्कपपद्खपपद्गपपद्घपपद्ङपपद्चप पद्छपपद्जपपद्झपपद्ञपपद्टपपद्ठप पद्डपपद्ढपपद्णपपद्तपपद्थपपद्दप पद्नपपद्नपपद्पपपद्फपपद्वपपद्भपद्मप पद्मपपद्मपद्रपपद्लपपद्ळपपद्घप पद्शपपद्षपपद्सपपद्हपपद्कपपद्खप पद्शपपद्जपपद्डपपद्कपपद्खप

पपध्कपपध्खपपभापपध्यपपख्यपध्यप पध्छपपध्जपपध्झपपध्जपपध्टपपध्टपपध्टप पध्नपपध्मपपध्मपपध्यपपध्यपध्मपप्यप पभ्रपपश्चपपध्लपपध्लपपध्लपपध्यप पध्मपपश्चपपध्लपपध्लपपध्लपपध्नप पध्मपपध्सपपध्लपप्रक्षपपध्लपप्रापपध्जप पष्टपपध्टपपध्मपप्रापप

पपन्कपपन्खपपनापपन्घपपन्डपपन्चपपन्छप पन्जपपन्झपपन्ञपपन्टपपन्ठपपन्डपपन्दप पन्गपपन्तपपन्थपपन्दपपन्थपपन्नपपन्नपपन्पप पन्फपपन्बपपन्भपपन्मपपन्यपपन्नपपन्त्रपपन्त्रप पन्ळपपन्ळपपन्वपपन्शपपन्सपपन्सपपन्हपपन्कप पन्खपपनापपन्जपपन्डपपन्द्रपपन्कपपन्सपप

पपप्कपपप्खपपणपपप्घपपप्डपपप्चपपप्छप पप्जपपप्झपपप्जपपप्टपपप्जपपप्डपपप्पपप्प पप्जपपप्भपपप्पपपप्यपपप्रपपप्रपपप्लपपप्ळप पप्लपपप्वपपप्शपपप्षपपप्सपपप्हपपप्कपपप्खप पणापप्जपपप्डपपप्कपपप्सपपप्यपप पपम्कपपपस्वपपमापपस्यपपम्डपपम्वप पम्छपपम्जपपम्झपपम्ञपपम्टपपम्ठपपम्डप पम्दपपम्णपपम्तपपम्थपपम्दपपम्थपपम्नप पम्नपपम्पपपम्कपपम्बपपम्भपपम्मपपम्यप प्रभपपम्सपपम्लपपम्ळपपम्छपपम्वपपम्शप पम्थपपम्सपपम्हपपम्कपपम्खपपम्गपपम्जप पम्डपपम्दपपम्भपपम्यपप

पपम्कपपम्खपपमापपम्घपपम्ङपपम्चपपम्छप पम्जपपम्झपपम्अपपम्दपपम्छपपम्दपपम्पप पम्णपपम्तपपम्थपपम्दपपम्थपपम्नपपम्लप पम्कपपम्ळपपम्वपपम्शपपम्बपपम्सपपम्हप पम्कपपम्खपपमापपम्जपपम्हपपम्हपपम्सपप पम्यपप

पपय्कपपय्खपपयापपय्घपपय्डपपय्घपपय्छप पय्जपपय्झपपय्जपपय्टपपय्छपपय्डपपय्छप पय्जपपय्बपपय्भपपय्यपप्यपप्रमपय्जप पय्कपपय्खपपय्वपपय्शपपय्यपप्रमपय्हप पय्कपपय्खपपयापप्यपपय्जपपय्हपपय्कपप्यप्यप्यप्यप्यप्यप्य

पपर्कपपर्खपपर्गपपर्घपपर्डपपर्चपपर्छपपर्जप पर्झपपर्ञपपर्टपपर्ठपपर्डपपर्द्वपपर्णपपर्तपपर्थप पर्दपपर्धपपर्नपपर्नपपर्पपपर्फपपर्बपपर्भपपर्मप पर्यपपर्रपपर्रपपर्लपपर्छपपर्छपपर्वपपर्शप पर्षपपर्सपपर्हपपर्छपपर्खपपर्शपपर्जपपर्डपपर्दप पर्फपपर्यपप

पपन्कपपन्खपपनापपञ्चपपञ्चपपञ्चप पन्जपपञ्चपपन्जपपन्टपपन्ठपपन्डपपन्कप पन्जपपञ्चपपन्यपपरूपपन्तपपन्तपपन्कप पन्कपपन्वपपश्चपपन्सपपन्हपपन्कपपञ्चप पन्नपपन्जपपञ्चपपन्कपपन्सपपन्सपप

पपल्कपपल्खपपलापपल्घपपल्डपपल्चपपल्छप पल्जपपल्झपपल्जपपल्टपपल्ठपपल्डपपल्डप पल्णपपल्तपपल्थपपल्दपपल्धपपल्नपपल्नप पल्पपपल्फपपल्बपपल्भपपल्मपपल्यपपल्लप पल्रपपल्लपपल्ळपपल्खपपल्यपपल्शपपल्षप पल्सपपल्हपपल्कपपल्खपपलापपल्जपपल्डप पल्सपपल्झपपल्झपप पपळकपपळखपपळगपपळघपपळङपपळचप पळछपपळजपपळझपपळञपपळटपपळठप पळडपपळढपपळणपपळतपपळथपपळदप पळधपपळनपपळऩपपळपपपळफपपळबप पळभपपळनपपळयपपळ्पपळऱपपळलपपळळप पळळपपळवपपळशपपळषपपळझप पळकपपळखपपळगापपळजपपळडप पळकपपळखपपळग्रपपळजपपळडप पळकपपळखपपळग्रपपळजपपळ

पपळकपपळखपपळगपपळघपपळडपपळचप पळछपपळजपपळझपपळञपपळटप पळडपपळढपपळणपपळतपपळथपपळदप पळधपपळनपपळनपपळपपपळभपपळबप पळभपपळमपपळयपपळ्पपळऱपपळलप पळळपपळळपपळवपपळशपपळषपपळसप पळहपपळकपपळखपपळखपपळगपपळडप पळढपपळकपपळखपपळ

पपक्कपपत्खपपगापपद्धपपत्कपपत्वपपद्धप पत्जपपद्भपपञ्जपपद्धपपञ्चपपद्धपपञ्चप पत्जपपद्भपपञ्चपपद्धपपञ्चपपञ्चप पत्वपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चप पत्जपपव्यपपञ्चपपञ्चपपञ्चप पद्धपपञ्चपपञ्जपपद्धपपद्धपपद्भपपञ्चप

पपश्कपपश्खपपश्गपपश्चपपश्चपपश्चपपश्छप पश्जपपश्झपपश्जपपश्टपपश्ठपपश्डपपश्ढप पश्णपपश्तपपश्यपपश्दपपश्यपपश्नप पश्पपपश्कपपश्चपपश्मपपश्मपपश्यपपश्रप पश्रपपश्लपपश्ळपपश्ळपपश्चपपश्शपपश्षप पश्सपपश्हपपश्कपपश्खपपश्गपपश्जपपश्डप पश्टपपश्कपपश्यपप तळ्वतत्रंचित्रस्यतत्रंचतक्षेततक्षेतत्रस्यत्रंचत तळ्ततत्र्वतत्रह्णातत्रस्यतक्षेतत्रस्यत्रस्य तत्र्यतत्रस्यतत्रस्तत्रस्तत्रस्ततत्र्यतत्रस्यतत्रस्तत्रस्तत्रस्य तत्यतत्रस्ततत्रस्तत्रस्तत्रस्तत्रस्तत्रस्तत्रस्तत्रस्तत्रस्तत्रस्तत्रस्तत्रस्तत्रस्तत्रस्तत्रस्तत्रस्तत्रस्त

पपस्कपपस्खपपस्गपपस्घपपस्डपपस्चप पस्छपपस्जपपस्झपपस्ञपपस्टपपस्छप पस्डपपस्णपपस्तपपस्थपपस्दपपस्धपपस्नप पस्नपपस्पपपस्कपपस्बपपस्भपपस्मपपस्यप पस्नपपस्तपपस्लपपस्ळपपस्ळपपस्वपपस्शप पस्मपपस्सपपस्हपपस्कपपस्खपपस्गप पस्डपपस्डपपस्कपपस्यपप

पपहकपपहखपपट्गपपस्घपपट्घपपट्घपपट्घपपट्घप पहजपपट्झपपट्ञपपट्टपपट्घपपट्घपपट्घप पह्चपपट्यपपट्थपपट्घपपट्घपपह्मपपट्मप पट्कपपट्खपपट्घपपट्घपपट्घपपट्सपपट्घप पट्कपपट्खपपट्घपपट्घपपट्घपपट्सपपट्घप पट्कपपट्खपपट्घपपट्घपपट्घपपट्घप पट्कपपट्खपपट्घपपट्घपपट्घपपट्घप पट्कपपट्यपप

पपक्ष्मपपक्ष्यपपक्ष्मपपक्ष्मपपक्ष्मपपक्ष्मपपक्ष्मपपक्ष्मपपक्ष्मपपक्ष्मपपक्ष्मपपक्ष्मपपक्ष्मपपक्ष्मपपक्ष्मपपक्षमप

पपइकपपइखपपइगपपइघपपइडपपइचप पइछपपइजपपइझपपइअपपइटपपइठपपइडप पइढपपइणपपइतपपइथपपइदपपइधपपइनपपइपप पइफपपइबपपइभपपइमपप पपइयपपइलपपइळप पइपपवपपइशपप पपइषपपइसपपइहपप

less common half-forms

पपत्जकपपत्जखपपत्जगपपत्जघपपत्जङपपत्जचप-पत्जछप

पत्जजपपत्जझपपत्जञपपत्जटपपत्जठपपत्जडप-पत्जढप

पत्जणपपत्जतपपत्जथपपत्जदपपत्जधपपत्जनप-पत्जपप

पल्जफपपल्जबपपल्जभपपल्जमपप पपल्जयपपल्जलप पल्जळपपल्जपपवपपल्जशपप पपल्जषपपल्जसपपल्ज-हपप

पपल्थकपपल्थखपपल्थगपपल्थघपपल्थङपपल्थचप-पल्थछप

पल्थजपपल्थझपपल्थञपपल्थटपपल्थठपपल्थडपपल्थ-ढप

पल्थणपपल्थतपपल्थथपपल्थदपपल्थधपपल्थनपपल्थपप पल्थफपपल्थबपपल्थभपपल्थमपप पपल्थयपपल्थलप पल्थळपपल्थपपवपपल्थशपप पपल्थषपपल्थसपपल्थह-पप

पपक्रकपपक्रखपपक्रगपपक्रधपपक्रडपपक्रचप पक्रछपपक्रजपपक्रझपपक्रञपपक्रटपपक्रठप पक्रडपपक्रखपपक्रणपपक्रतपपक्रथपपक्रदप पक्रधपपक्रनपपक्रयपपक्रफपपक्रबपपक्रभपपक्रमप पपक्रयपपक्रलपपक्रळपपक्रयपवपपक्रशप पपक्रथपपक्रसपपक्रहपप

 पञ्जपपख्रपपख्रपपख्रपपख्रपपख्रपप पख्रपपख्लपपख्रपपख्रपवपपख्राप पख्रपपख्रपपख्रपप

पपःक्रपपःखपपःगपपःघपपःइपपःचपपःखप पःजपपःइपपःञ्जपपःदपपःठपपःइपपःदप पःगपपःतपपःथपपःदपपःथपपःजपपःगप पःगपपःखपपःभपपःगपपःपपःजपपःञ्जप पःगपवपपःशपप पपःशपपःसपपःहपप

पपप्रक्रपपप्रखपपप्रापपप्रधपपप्रसपपप्रसपपप्रथप पप्रजपपप्रसपपप्रभपपप्रदपपप्रथपपप्रसपपप्रमप पप्रमपपप्रसपपप्रभपपप्रमपप पपप्रयपपप्रसपपप्रसपपप्रभपपप्रसपपप्रसपपप्रसपपप्रसपपप्रसपपप्रसपपप्रसपपप्रसपप

पपच्कपपच्खपपच्चापपच्चपपच्छपपच्छपपच्छप पच्जपपच्झपपच्ञपपच्टपपच्छपपच्छपपच्छप पच्चापपच्चपपच्थपपच्दपपच्धपपच्नपपच्मप पच्मपपच्खपपच्भपपच्मपपच्यपपच्लपपच्छप पच्मपवपपच्शपपच्मपपच्सपपच्सपप

पपज्रमपपञ्चपपजापपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्छप पञ्जपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चप पञ्जपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चप पञ्जपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चप पञ्जपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चपप

पपइक्रपपइख्रपपझ्यपपइस्यपपइस्यपपइस्यप पइस्ठपपइज्जपपइस्यपपइञ्जपपइस्य पइस्वपपइम्मपपइतपपइश्यपपइस्यपपइस्य पइस्यपपइम्मपपइस्यपपइश्मपप पपइस्यप पइस्यपपइस्यपद्भपपदश्मपपइस्यप पदस्यप पपञ्रमपञ्चपपञ्रापपञ्चपपञ्चप पञ्छपपञ्जपपञ्चापपञ्जपपञ्चप पञ्चपपञ्चपपञ्चापपञ्चपपञ्चप पञ्जपपञ्चपपञ्मपपञ्चपपञ्चपप पञ्जपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चप पञ्जपपञ्चपपञ्चपपञ्चपपञ्चपप पञ्चपप

पपण्कपपण्खपपणापपण्घपपण्डपपण्चपपण्छप पण्जपपण्झपपण्जपपण्टपपण्ठपपण्डपपण्डप पण्णापपण्जपपण्थपपण्दपपण्धपपण्जपपण्णप पण्फपपण्बपपण्भपपण्मपप पपण्यपपण्जप पण्ळपपण्णपवपपण्शपप पपण्यपपण्लपप

पप्रक्रपप्रखपप्रगपप्रघपप्रह्मपप्रचपप्रछप प्रजपप्रह्मपप्रञपप्रटपप्रठपप्रहमप्रद्धप प्रणपप्रतपप्रथपप्रदपप्रधपप्रनपप्रभप प्रमप्रप्रखपप्रभपप्रमपप पप्रयपप्रलप प्रजपप्रभपवपप्रशपप पप्रथपप्रसपप्रहमप

पप्रक्रपप्रख्रपप्रापप्रध्रपप्रह्रपप्रच्रपप्रध्रप प्रज्ञपप्रद्रापप्रञ्जपप्रद्रपप्रध्रपप्रह्रपप्रद्रप प्रध्रापप्रतपप्रथ्रपप्रद्रपप्रध्रपप्रमप्रप प्रक्रपप्रख्रपप्रभपप्रमपप पप्रयपप्रलप प्रद्रजपप्रमप्रपप्रप्रपप्रसप्पर्रसप्

पपत्कपपत्खपपनापपत्चपपत्कपपत्चपपत्छप पत्जपपत्झपपत्ञपपत्टपपत्ठपपत्हपपत्रप पत्गपपत्नपपश्चपपत्दपपश्चपपत्नपपत्मप पत्वपपश्चपपत्मपप पपत्यपपत्लपपत्रपपत्मप वपपश्चपप पपत्रपपत्लपप

पपप्रमपप्रवपप्रापप्रचपप्रज्ञपपप्रणप प्रजपप्रवपप्रमपप्रपप्रपपप्रपपप्रपप्रणप प्रतपप्रथपप्रदपपश्चपप्रपप्रपप्रपप्रपप्रमपप्रमप पश्मपप्रमपप पप्रयपप्रलपप्रज्ञपप्रप्रप्रपय प्रशपप पप्रजपप्रसपप्रतपप

पपप्रकपपप्रखपपप्रगपपप्रघपपप्रखपपप्रचप पप्रछपपप्रजपपप्रझपपप्रजपपप्रटपपप्रठप पप्रडपपप्रखपपप्रणपप्रतपपप्रथपपप्रदपपप्रधप पप्रनपपप्रपपपप्रकपपप्रचपपप्रभपपप्रपप पपप्रयपपप्रलपपप्रखपपप्रपपवपपप्रशपप पपप्रयपपप्रसपपप्रहपप